समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• फरवरी २०२३ • वर्ष ७४ • अंक ०२
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

७४वां गणतंत्र दिवस के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में ध्वज फहराते सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, मौके पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रूंगटा, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री द्वय श्री रतन शाह, श्री शिव कुमार लोहिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद विदावतका एवं सर्वश्री आत्माराम सोंथलिया, कैलाश प्रसाद तोदी, एडवोकेट नंदलाल सिंघानिया, ओम प्रकाश अग्रवाल, रतन लाल अग्रवाल, लक्ष्मीपत भुतोड़िया, पवन कुमार जालान उपस्थित थे।

इस अंक में

सम्पादकीय
जीवन बाहर नहीं, अंदर है !

अध्यक्षीय
राष्ट्रीयता का बोध है अमृत महोत्सव

रपट
गणतंत्र दिवस समारोह

प्रादेशिक समाचार
बिहार, तेलंगाना, झारखंड, नेपाल, उत्तराखंड
पूर्वोत्तर, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़

आलेख
विधवाओं और विधुरों को मिले स्वयंवर में मौका - भानीराम सुरेका
मातृशक्ति नमोस्तुते: - दिनेश कुमार जैन

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

समाज विकास

◆ फरवरी २०२३ ◆ वर्ष ७४ ◆ अंक ०२
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** जीवन बाहर नहीं, अंदर है !	६-७
● **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** राष्ट्रीयता का बोध है अमृत महोत्सव	८
● **रपट –** गणतंत्र दिवस समारोह	११-१२
● **प्रादेशिक समाचार** बिहार, तेलंगाना, झारखंड, नेपाल, उत्तराखंड, पूर्वोत्तर, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़	९-१०, १३-१५, १८-२०, २३
● होली की उपाधियाँ	१६-१७
● **आलेख** विधवाओं और विधुरों को मिले स्वयंवर में मौका – **भानीराम सुरेका**	२४
मातृशक्ति नमोस्तुते: – **दिनेश कुमार जैन**	२५
कब आओगे प्रभु – **रतन लाल बंका**	२६-२७
● **देव-स्तुति :** डॉ. जुगल किशोर सर्राफ	३०

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.in

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

भाई लोहिया जी,

जनवरी अंक में आपने ठीक लिखा कि शादी विवाह एक पवित्र संस्कार अनुष्ठान है, अब प्रदर्शन एवं आडंबर के हाथे चढ़ गया है। अफसोस है कि भारतीय संस्कृति की खूब बातें करने वाला मारवाड़ी समाज इस आडंबर में सर्वाधिक लिप्त है। सम्मेलन को कोई ठोस कदम उठाना चाहिए। हालांकि हमारी समस्या है कि पर उपदेश कुशल बहुतेरे, हम चाहते हैं कि हम तो चाहे जैसे करते रहें, लेकिन और लोगों को सुधरना चाहिये।

– डॉ. बाबूलाल शर्मा
सम्पादक, वैचारिकी (त्रैमासिक) शोध पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट
हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

ESTD. 1935 Telephone : +91-33-40044089 Website : marwarisammelan.in E-mail : aimf1935@gmail.com

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. under W.B. Societies act XXVI of 1961)

४बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला), ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-७०० ०१७
4B, Duckback House (4th Floor), 41, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 017

-: प्रमुख उद्देश्य :-
समाज सुधार, समरसता, राजनैतिक चेतना, सामाजिक उत्थान एवं राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय अध्यक्ष
गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
094315 82989

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
संतोष सराफ
098300 21319

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
भानीराम सुरेका
093311 13332
पवन कुमार गोयनका
093125 09329
पवन कुमार सुरेका
099340 60161
अशोक कुमार जालान
094375 79833
डॉ. श्याम सुंदर हरलालका
070023 27155
विजय कुमार लोहिया
98400 24781

राष्ट्रीय महामंत्री
संजय कुमार हरलालका
098041 54115

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
गोपाल अग्रवाल
093310 16950
सुदेश अग्रवाल
093311 45291

राष्ट्रीय संगठन मंत्री
बसंत कुमार मित्तल
077818 11101

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
दामोदर प्रसाद बिदावतका
093310 15088

-: प्रादेशिक शाखा सम्मेलन :-
बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उत्कल, पूर्वोत्तर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, तमिलनाडु, गुजरात, कर्नाटक, तेलंगाना एवं केरल

अ.भा.मा.स./19/2022-23 16 फरवरी 2023

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति के सभी सम्माननीय सदस्यों के सादर सूचनार्थ

महोदय/महोदया,

सर्वप्रथम आपके सपरिवार एवं सबन्धु-बान्धव सहित स्वस्थ-मंगल रहने की अंतःकरण से कामना।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति की वर्तमान सत्र की पांचवी बैठक आगामी रविवार, 19 मार्च 2023 को सुबह 11 बजे से, उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में श्री महाराजा अग्रसेन भवन, K ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर में निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

बैठक का सभापतित्व सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया करेंगे।

बैठक में आपकी उपस्थिति सादर निवेदित है।

भवदीय

(संजय कुमार हरलालका)
राष्ट्रीय महामंत्री

बैठक में विचारार्थ विषय :-
1. अध्यक्षीय उद्‌बोधन।
2. गत अखिल भारतीय समिति की बैठक का कार्यवृत पारित करना।
3. राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा विगत कार्यकलापों की जानकारी।
4. चुनाव अधिकारी/सहायक चुनाव अधिकारी द्वारा संविधान सम्मत प्रक्रिया के तहत आगामी राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए प्रांतों से प्राप्त नामों के प्रस्तावों की विस्तृत जानकारी तथा आगामी निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम की घोषणा।
5. विविध - राष्ट्रीय अध्यक्ष की अनुमति से।

संलग्न :-
1. गत बैठक का कार्यवृत।
2. चुनाव अधिकारी द्वारा जारी किये गये चुनाव से सम्बन्धित पत्रों की छाया प्रति।

महत्वपूर्ण ध्यानार्थ : कानपुर से बाहर से पधारने वाले सभी सम्माननीय अखिल भारतीय समिति के सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने आगमन एवं प्रस्थान सम्बंधी सूचना कोलकाता स्थित केन्द्रीय सम्मेलन मुख्यालय (फोनः 033-40044089/व्हाट्सअप नं. 8697317557 या ईमेलः aimf1935@gmail.com तथा उत्तर प्रदेश प्रांत के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान - फोन नं. 94150 43646 (ईमेलः pbandsons@gmail.com) अथवा संयोजक श्री ओम प्रकाश अग्रवाल- फोन नं. 9415043469 को 5 मार्च 2023 तक अवश्य देने की कृपा करें, ताकि आतिथ्य प्रांत की आवश्यकतानुसार समुचित व्यवस्था सुचारू रूप से करने में सहूलियत हो।

संस्कारों की नाव पर, समय की धार पर

ESTD. 1935 Telephone : +91-33-40044089 Website : marwarisammelan.com E-mail : aimf1935@gmail.com

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. under W.B. Societies act XXVI of 1961)

४बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला), ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-७०० ०१७
4B, Duckback House (4th Floor), 41, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 017

-: प्रमुख उद्देश्य :-
समाज सुधार, समरसता, राजनैतिक चेतना, सामाजिक उत्थान एवं राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय अध्यक्ष
गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
094315 82989

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
संतोष सराफ
098300 21319

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
भानीराम सुरेका
093311 13332
पवन कुमार गोयनका
093125 09329
पवन कुमार सुरेका
099340 60161
अशोक कुमार जालान
094375 79833
डॉ. श्याम सुंदर हरलालका
070023 27155
विजय कुमार लोहिया
98400 24781

राष्ट्रीय महामंत्री
संजय कुमार हरलालका
098041 54115

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
गोपाल अग्रवाल
093310 16950
सुदेश अग्रवाल
093311 45291

राष्ट्रीय संगठन मंत्री
बसंत कुमार मित्तल
077818 11101

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
दामोदर प्रसाद बिदावतका
093310 15088

-: प्रादेशिक शाखा सम्मेलन :-
बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उत्कल, पूर्वोत्तर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, तमिलनाडु, गुजरात, कर्नाटक, तेलंगाना एवं केरल

अ.भा.मा.स./19/2022-23 16 फरवरी 2023

अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सभी सम्माननीय सदस्यों के सादर सूचनार्थ

महोदय/महोदया,

सर्वप्रथम आपके सपरिवार एवं सबन्धु-बान्धव सहित स्वस्थ-मंगल रहने की ईश्वर से अंत:करण से कामना करता हूँ।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की वर्तमान सत्र की अष्टम बैठक आगामी रविवार, 19 मार्च 2023 को दोपहर 2 बजे से, उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में श्री महाराजा अग्रसेन भवन, K ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर में निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

बैठक का सभापतित्व सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया करेंगे।

बैठक में आपकी उपस्थिति सादर निवेदित है।

भवदीय

(संजय कुमार हरलालका)
राष्ट्रीय महामंत्री

बैठक में विचारार्थ विषय :-

1. अध्यक्षीय उद्‌बोधन।
2. गत राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक का कार्यवृत पारित करना।
3. राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा विगत कार्यकलापों की जानकारी।
4. सत्र 2023-25 के लिए चुनाव अधिकारी द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव हेतु सम्पन्न की गई प्रक्रिया से सम्बन्धित दी गई जानकारी से अवगत करना।
5. राष्ट्रीय साधारण अधिवेशन की तारीख/समय तथा स्थान निश्चित करने पर आवश्यक निर्णय।
6. विविध - राष्ट्रीय अध्यक्ष की अनुमति से।

महत्वपूर्ण ध्यानार्थ : कानपुर से बाहर से पधारने वाले सभी सम्माननीय अखिल भारतीय समिति के सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने आगमन एवं प्रस्थान सम्बंधी सूचना कोलकाता स्थित केन्द्रीय सम्मेलन मुख्यालय (फोन: 033-40044089/व्हाट्सअप नं. 8697317557 या ईमेल: aimf1935@gmail.com तथा उत्तर प्रदेश प्रांत के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान - फोन नं. 94150 43646 (ईमेल: pbandsons@gmail.com) अथवा संयोजक श्री ओम प्रकाश अग्रवाल- फोन नं. 9415043469 को 5 मार्च 2023 तक अवश्य देने की कृपा करें, ताकि आतिथ्य प्रांत को आवश्यकतानुसार समुचित व्यवस्था सुचारू रूप से करने में सहूलियत हो।

संस्कारों की नाव पर, समय की धार पर

सम्मेलन भवन : २५९, राजा राममोहन राय सरणी (अम्हर्स्ट स्ट्रीट), कोलकाता-७०० ००९

जीवन बाहर नहीं, अंदर है!

जीवन एक पहेली है। विश्व की आबादी लगभग ८०० करोड़ है। सब अलग-अलग जीवन जी रहे हैं। अक्सर हम दुनिया की भूल-भूलैया में उलझकर जीवन के सही मायने समझ नहीं पाते। हम हमारे जीवन से भी सीखते रहते है, परन्तु अक्सर विलम्ब हो जाती है। इसीलिये कहा गया है कि अनुभव वह कंघी है जो हमें गंजे होने पर मिलती है।

ऑस्ट्रेलिया के अस्पताल की एक नर्स ब्रानी वेयर वृद्धजनों के वार्ड में कर्मरत थी। उस वार्ड में उन वृद्धों को रखा जाता था, जो अपने जीवन के अंतिम दिन गुजार रहे होते थे। उन वृद्धों का वेयर देखभाल करती थी। उसने दीर्घ वर्षों तक एक सर्वे किया। अपने वार्ड के रोगियों को वह पूछती कि जीवन में उन्हें किस बात का सबसे अधिक अफसोस है। जो बातें उन वृद्धजनों ने बतायी उसे वेयर ने 'दी टाप फाइव रिग्रेट्स आफ द डाईंग' (The Top Five Regrets of the Dying) नामक एक पुस्तक में लिपिवद्ध किया है।

वेयर ने बताया कि अंतिम समय में मनुष्य की दृष्टि सुस्पष्ट हो जाती है। हम उनके अनुभव से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनसे पूछा गया कि उन्हें जीवन को फिर से जीने मौका मिले तो नया क्या करना चाहेंगे। उस सर्वेक्षण से जो पांच सर्वोपरि बातें निकल कर आई वे इस प्रकार है –

१. काश, मुझे मेरे इच्छानुसार जीवन जीने का साहस होता, नाकि वैसा जीवन जो कि दूसरे अपेक्षा रखते थे। यह लोगों का सबसे बड़ा पछतावा था। अंत समय में उन्हें महसूस होता है कि दूसरों के मुताबिक जीवन जीने से वे अपने सपने पूरे नहीं कर पाते।
२. काश मैंने अपने परिवार को ज्यादा समय दिया होता और इतनी मेहनत नहीं की होती। ब्रानी वेयर लिखती है कि यह बात हर एक पुरुष व्यक्ति ने एवं कुछ महिलाओं ने कहीं।
३. काश मुझमें अपने दिल की बात बताने की हिम्मत होती। बहुत से लोग अपने दिल की भावनाओं को दबा देते है ताकि सब उनसे खुश रहे। अंतिम समय में वे स्वयं असंतोष, कड़वाहट व निराशा से भर जाते है। उस कारण बीमारियों के भी शिकार हो जाते है।
४. काश मैं अपने जवानी के दोस्तों के साथ दोस्ती कायम रखता। अवसर जीवन में हम पुराने दोस्ती के महत्व को महसूस नहीं कर पाते। पुराने रिश्तों को समय और अहमियत न दे पाने के कारण सब छूट जाते है। सभी लोग अपने अंतिम दिनों में अपने पुराने दोस्तों को बहुत ज्यादा याद करते हैं।
५. खुश रहना हमारी प्रकृति होती है। काश मुझे यह पहले मालूम होता। लोग अंतिम समय तक यह नहीं समझ पाते कि खुश रहना एक पसंद (choice) होती है। अर्थात खुश रहना किसी भी बाहरी चीज पर निर्भर नहीं होती।

खुश रहने का विकल्प मनुष्य के पास सदैव रहता है, मगर अपनी अज्ञानता के कारण वे खुशी से दूर रहते है। पर लोग यह सोचकर बहुत पछताते है कि उनका जीवन में खुश नहीं रहने का एकमात्र कारण स्वयं ही थे।

आज के भौतिक युग में इतने अधिक विकल्प है कि लोभ, मोह के फलस्वरूप अज्ञानता में मनुष्य भ्रमित हो, जीवन को एवं उसके मकसद को समझ नहीं पाता। अपने द्वारा ही बुने हुए भ्रम जाल में वह फंस कर गलत प्राथमिकताएँ चुन लेते है। इस कारण समाज में व्यक्ति गलत उदाहरण रखते हुए दूसरों को भी प्रभावित करते हैं। दो समस्याओं से आज व्यक्ति ग्रसित है। पहला तो 'क्या कहेंगे लोग' दूसरा, लोगों को कैसे प्रभावित करे ताकि उनका मान-सम्मान हो। इस कवायद के कारण व्यक्ति कृत्रिम जीवन जीने को बाध्य हो जाता है। धनी एवं सुखी होने से धनी एवं सुखी दिखना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इस कारण मनुष्य अपनी शांति खो देता है। प्रश्न यह उठता है कि इस तरह की आपाधापी एवं उधेड़बुन में बिताये हुए दिनों का जीवन में क्या महत्व रखता है।

बुद्ध के पास एक भिक्षु आया। बुद्ध ने पूछा – तेरी उम्र क्या है? भिक्षु ने कहा – चार वर्ष। भिक्षु, जो कि बूढ़ा था, का उम्र सुन सब हैरान हो गए। बुद्ध ने कहा – बड़ी हैरानी में डाल दिया तुमने। तुम्हें देखकर तो लगता है कि सत्तर के लगभग उम्र होगी तुम्हारी। चार वर्ष किस हिसाब से गणना कर रहे हो। उस बूढ़े ने कहा – चार वर्ष पहले जो जीवन था, वह जीवन नहीं था। उसकी मैं गिनती नहीं करता। इधर चार वर्षों से जीवन में सुगंध मिलनी प्रारम्भ हुई है। इधर चार वर्षो से चित्त शांत हुआ है। इधर चार वर्षों से भीतर झांका तो उसकी प्रतीति हुई जो जीवन है। बाहर तो शोक थी मृत्यु थी, जीवन भीतर था। मैं बाहर ही देखता रहा, तो चार वर्ष पहले तक मैंने मृत्यु को जाना था। उस उम्र को जीवन की उम्र कैसे बताऊँ। वह जीवन की गणना में नहीं आती। तब बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा – "भिक्षुओं उस आदमी ने जिंदगी को नापने की नई बात बताई है। आज से मेरे भिक्षुओ की उम्र उसी दिन से नापी जायेगी, जिस दिन से उनको शांति मिले और जीवन को अनुभव करे। उसके पहले की उम्र अब नहीं जोड़ी जायेगी। कौन सी बात दिखी होगी उस बूढ़े व्यक्ति को, क्या दिखाई दिया होगा? कौन है? कौन है भीतर? कोई उसे आत्मा कहे, कोई परमात्मा कहे, उचित तो यही है, हम उसे जीवन कहे।

हम झूठ फरेब, छल कपट से शरीर के लिए आराम तो

कमा सकते हैं, पर उससे आत्मा बहुत कमजोर हो जाती है और जिसकी आत्मा कमजोर है उसका शरीर अपने आप अस्वस्थ रहने लगता है। अपनी तरफ से हर कार्य बेहतरीन तरीके से करें। बाकी आत्मा पर छोड़ दें। धनी होना, गुणी होना, उच्चशिक्षा युक्त होना, यशवान होना, एक सार्थक जीवन का पर्याय नहीं है। सार्थक जीवन के उपादान है – विनयी होना, दूसरों का सम्मान करना, दूसरों के काम आना। दुनिया के सारे सुख-सुविधा के साधन होना जीवन की सफलता नहीं हैं। जो भी कुछ जीवन हमें देता है उनका सर्वोत्तम उपयोग करना हमें सर्वाधिक सार्थक बनाता है। समझने की बात है कि अगर पैसों से खुशी मिलती तो दुनिया में सारे अमीर खरीद लेते। खुशी जीवन जीने के ढंग से आती है। जिन्दगी भले ही खूबसूरत हो, लेकिन जीने का अंदाज खूबसूरत ना होने से उसे बदसूरत होते देर नहीं लगती। झोपड़ी में भी कोई आदमी आनन्द में लबालब मिल सकता है और कोठियों में भी दुःखी, अशांत और परेशान रह सकता हैं। अच्छे विचार के अभाव में धन और बल गलत राह पर ही ले जाते है।

एक नगर का राजा, जिसे ईश्वर ने एक समृद्ध राज्य, सुशील और गुणवंती पत्नी, संस्कारी संतान सब कुछ दिया, फिर भी वह दुखी रहता था। एक बार वह एक छोटे गांव में पहुंचा, जहाँ एक कुम्हार मंदिर के बाहर मटकियाँ बेच रहा था। कुछ मटकियों में पानी भरा हुआ था। वहीं पर लेटे हुए वह कुम्हार भजन भी गा रहा था। राजा वहाँ आया। मंदिर में भगवान के दर्शन किये। उसके भजन से प्रभावित होकर राजा कुम्हार के पास आया। उन्हें देखकर कुम्हार बैठ गया और बड़े आदर के साथ राजा को पानी पिलाया। राजा ने सोचा इतनी सी मटकियाँ बेचकर क्या कमाता होगा।

राजा ने पूछा – क्यों, प्रजापति, मेरे साथ नगर चलोगे?

प्रजापति ने कहा – वहा जाकर क्या करुंगा, राजाजी?

राजा – वहाँ चलकर खूब मटकियाँ बनाना।

प्रजापति – इन मटकियों का क्या करूँगा?

राजा – अरे, उन्हें बेचने से खूब पैसा आयेगा तुम्हारे पास।

प्रजापति – फिर क्या करुंगा उस पैसे का?

राजा – अरे पैसे का क्या करेगा? पैसा ही सब कुछ है।

प्रजापति – अच्छा राजन, आप ये बताईये कि उन पैसों का मैं क्या करुंगा?

राजा – अरे फिर आराम से भगवान का भजन करना और आनंद में रहना।

प्रजापति – क्षमा करना, हे राजन। आप मुझे यह बताईये कि अभी मैं क्या कर रहा हूँ।

राजा ने काफी सोच विचार किया। इस प्रश्न ने राजा को झकझोर दिया।

राजा ने कहा – हाँ भाई। इस समय तुम आराम से भजन कर रहे हो एवं मुझे तो समझ में आ रहा है, पूरे आनंद में हो।

प्रजापति – राजन, यही तो मैं आपसे कह रहा हूँ, कि पैसे से आनंद प्राप्त नहीं किया जा सकता।

राजा – भाई, मुझे बताओ कि आनंद की प्राप्ति कैसे होगी?

प्रजापति – राजन, मेरा कहना है कि हाथों को उलट लीजिए।

राजा – वो कैसे?

प्रजापति – हे राजन! मांगना नहीं देना सीखों। यदि देना सीख लिया तो आनंद की राह पर कदम रख लिया। स्वार्थ को त्यागो, परमार्थ को चुनो। अधिकांशतः दुःख का सबसे बड़ा कारण है कि व्यक्ति के पास जो है वो उसमें सुखी नहीं है और जो नही है उसको पाने के चक्कर में दुखी है।

जीवन मिलता नहीं उसे निर्मित करना होता है। जन्म मिलता है। जीवन एक ऐसी यात्रा है जिसके आप स्वयं चालक हो। जीवन एक वीणा है। इस वीणा को बजाना हमें सीखना है। जो सीख जाते है वो सुमधुर संगीत का आनंद लेते है। जीवन का लक्ष्य है जीवन को पा लेना। जीवन हमारे भीतर मौजूद है। इंसान का मूल लक्ष्य है मन को **'अपना'** बनाना यानि अंदर (अ) प्रेमन (प), निर्मल (न) और आज्ञाकारी (आ) बनाना। जो हम हकीकत में हैं उसे जानना, जीवन का मूल लक्ष्य है। जीवन जीने का अर्थ सिर्फ अस्तित्व बनाए रखना नहीं है। जीवन को चैतन्यता के साथ जीना पड़ता है। कवि ने इस पहलू का निम्नलिखित पंक्तियों में सुंदरता के साथ चित्रण किया है :–

आप धीरे-धीरे मरने लगते हो,
यदि आप यात्रा नहीं करते हैं,
यदि आप नहीं पढ़ते हैं,
यदि आप जीवन की आवाज़ नहीं सुनते हैं,
यदि आप स्वयं की सराहना नहीं करते हैं।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हो
जब आप अपने स्वाभिमान की हत्या करते हैं;
जब आप दूसरों को अपनी मदद नहीं करने देते।
आप धीरे-धीरे मरने लगते हो,
यदि आप अपनी आदतों के गुलाम बन जाते हैं,
रोज चलते हैं उन्हीं रास्तों पर...।

या आप उन लोगों से बात नहीं करते जिन्हें आप नहीं जानते।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हो

अगर आप जुनून महसूस करने से बचते हैं, जो आपकी आंखों को चमका दें और जिसके लिये आपका दिल तेजी से धड़कता है।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हो यदि

आप अपनी नौकरी से, या अपने प्यार से संतुष्ट नहीं होने पर अपना जीवन नहीं बदलते हैं,

यदि आप जोखिम नहीं उठाते हैं, जो अनिश्चित के लिए सुरक्षित है,

यदि आप एक सपने के पीछे नहीं जाते हैं,

यदि आप अपने आप को अनुमति नहीं देते हैं, अपने जीवनकाल में कम से कम एक बार, समझदार सलाह से दूर भागने के लिए।

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

राष्ट्रीयता का बोध है अमृत महोत्सव

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

सभी बंधुओं का सादर अभिनंदन। ईश्वर सदैव आप सभी को स्वस्थ, कुशल एवं सुखी रखें। १२ मार्च १९३० जो पुण्य दिवस है महात्मा गांधी की दांडी यात्रा का, उसी दिन १२ मार्च २०२१ को साबरमती आश्रम से ही अमृत महोत्सव का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ और यह महोत्सव १५ अगस्त २०२३ तक चलेगा। अमृत महोत्सव सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय चेतना एवं स्वदेशी की भावना के पुनर्जागरण का महापर्व है। ऐसे अनेकों आजादी के हमारे नायकों को जानने का अवसर है जिनको इतिहास में कतिपय कारणों से समुचित स्थान नहीं मिल सका पर जिन्होंने आजादी के लिए अपना सर्वस्व निछावर किया था, स्वतंत्रता की लड़ाई में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। भगवान बिरसा मुंडा, सिद्धो कानू, तेलंगा खड़िया, रमना आहडी, करिया पुजहर, तिलका मांझी, रानी सर्वेश्वरी देवी, चांद, भैरवआदि लाखों वीरों ने अपनी शहादत दी राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए, इनका इतिहास अब उजागर हो रहा है और नई पीढ़ी भी उससे अवगत हो रही है। यह राष्ट्रीयता के बोध के पुनर्जागरण का महोत्सव है।

आस्था के स्थानों एवं मंदिरों के पुनरुद्धार का कार्य भी तेजी से हो रहा है। काशी विश्वनाथ मंदिर से मां गंगा के तट तक का पुनर्निर्माण-वृहद खुले परिसर के साथ, साथ में कई मंदिरों का जीर्णोद्धार, अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के मंदिर का निर्माण जो इस वर्ष के अंत तक पूरा हो जाएगा, उज्जैन में महाकाल लोक का वृहद स्तर पर निर्माण एवं विस्तार, केदारनाथ मंदिर के परिसर का सौंदर्यीकरण आदि अनेकों धार्मिक तीर्थ स्थलों का पुनरुद्धार, पुनर्निर्माण, सौन्दर्यीयकरण, विस्तारीकरण आदि हुआ है। काशी तमिल संगमम् का एक भारत श्रेष्ठ भारत के आदर्श के तहत १९ नवम्बर २०२२ को उद्घाटन हुआ। यह कार्यक्रम एक माह तक चला। दक्षिण राज्यों से भागीदारी के लिये वृहद स्तर पर लोगों का काशी में आगमन हुआ। उत्तर और दक्षिण के मेल का, उसे एक कडी के रूप में जोड़ने का अभूतपूर्व प्रयास था। *यह है राष्ट्र बोध का भाव।*

कई विद्यालयों में आध्यात्मिक शिक्षा के लिए अलग से कक्षाएं लग रही हैं ताकि अपनी सनातन संस्कृति की जानकारी एवं शुभ संस्कारों का बीजारोपण युवा पीढ़ी में शुरु से ही होने लगे। इस वर्ष के बजट में सरकार ने उन्नत शिक्षा संस्थानों में ARTIFICIAL INTELLIGENCE को बढ़ावा देने का संकल्प व्यक्त किया है जो देश की प्रगति के लिये समय की आवश्यकता है। पिछले माह हमने १२ जनवरी को स्वामी विवेकानंद जयंती, २३ जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती तथा २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया। स्वामी विवेकानंद और नेताजी सुभाष चंद्र बोस दोनों हमारी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं एवं हमारी राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक, वहीं २६ जनवरी हमें अपनी सार्वभौमिकता का अहसास कराती है।

शिक्षा का नया पाठ्यक्रम शुरु होने जा रहा है। कुछ प्रांतों ने अपने यहां पढ़ाई का माध्यम मातृभाषा में कर दिया है जो पहले अंग्रेजी में था। इससे दासता की एक बेड़ी और टूटेगी। अपनी मातृभाषा में पढ़ाई से विद्यार्थियों को विषय को समझने में सहजता होगी। विषय को रटने की प्रवृत्ति समाप्त होगी तथा सोचने और मनन करने की क्षमता का विकास होगा। नई शिक्षा नीति हुनरमंद तैयार करेगी ना कि नौकरी चाहने वालों की भीड़, हुनर सीख कर वे स्वयं का कोई रोजगार कर सकेंगे साथ ही साथ दूसरों को भी कुछ काम सुलभ करा सकेंगे।

पिछले कुछ वर्षों से प्रवासी दिवस भी मनाया जाने लगा है जो इस वर्ष ८ से १० जनवरी को इंदौर में संपन्न हुआ। प्रवासी उद्योगपति इसमें भागीदारी करते हैं उनमें भी हाल के वर्षों में देश की तरक्की को लेकर सद्भाव का प्रादुर्भाव हुआ है। केंद्र की तरफ से उन्हें हर तरह की सुविधा सुलभ कराई जाती है। लालफीताशाही भी कम हुई है। सरकारी स्तर पर काम जल्दी आगे बढ़ता हे, जहां पहले महीनों लटका रहता था। प्रधानमंत्री कार्यालय से बिना विलंब के कार्यवाही की जाती है।

पहले अपनी युवा पीढ़ी जानकारी के अभाव में अपनी संस्कृति की अवहेलना और उपहास किया करते थे, परंतु अब ऐसा नहीं है। युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति की शाश्वतता का आभास होने लगा है। हजारों वर्षों की दासता ने अपनी संस्कृति को भी आक्रांत किया। अंग्रेजों का तो इस ओर विशेष प्रयास रहा। मुगलों का तो मुख्य ध्यान धर्म परिवर्तन, मंदिरों को ध्वस्त करना और उनके स्थान पर मस्जिद बनाना रहा जबकि अंग्रेज धर्म परिवर्तन के साथ साथ हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार, हमारे पहनावे, हमारे आचार विचार सभी को तहस-नहस करने पर दृढ़ संकल्प थे। हमारी गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली और आयुर्वेद के उपचार की पद्धति को उन्होंने बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाया।

इन दिनों देव भाषा संस्कृत पढ़ने में भी युवाओं की रुचि बढ़ी है। संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है। इसमें जो लिखा जाता है वही बोला जाता है, अंग्रेजी भाषा की तरह बट औरपुट का फर्क नहीं है। संस्कृत में लिखें कई ग्रंथों को विदेशी आक्रांताओं ने जल दिया या नष्ट कर दिया। नालंदा विश्वविद्यालय इसका उदाहरण है जहां महीनों तक ग्रंथों में आग लगी रही। संस्कृत सीखने का भाव भी अमृत महोत्सव का प्रभाव है।

कोरोना महामारी से शिथिल हुई अर्थव्यवस्था के उपरांत भी देश में कई क्षेत्रों में अच्छी तरक्की हुई है। विश्व मंदी की चपेट में है इसके बावजूद हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत स्थिति में है। कई क्षेत्रों में हमने सराहनीय प्रगति की है। कृषि, उद्योग, वाणिज्य, निर्यात इसके उदाहरण हैं। भारत की साख विश्व में आज बहुत अच्छी है। राजनैतिक स्तर पर भी हम अपनी हर समस्या का समाधान दृढ़तापूर्वक करते हैं जो हमारी छवि को उज्जवल बना रहा है। यह राष्ट्रीयता के बोध का प्रतिफल है। इस अमृतकाल में २२ शहर स्मार्ट सिटी की श्रेणी में आ जायेंगे। हर क्षेत्र में विकास की सम्भावना तलाशी जा रही है। भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण का भी भरसक प्रयास किया जा रहा है। आजादी के बाद से ७० सालों में भ्रष्टाचार चरम पर पहुंच गया है, इसका उन्मुलन एक चुनौती है। विभिन्न केन्द्रीय करों से होने वाले राजस्व में अप्रत्याशित वृद्धि देश को आर्थिक सम्बल प्रदान कर रही है। यह राष्ट्रीयता के बोध का ही प्रतिफल है।

मारवाड़ी सम्मेलन का ध्येय वाक्य है 'म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति' जो अमृत महोत्सव की मूल भावना से मेल खाता है। हम सभी का कर्तव्य है कि राष्ट्रहित में अपना अमूल्य योगदान दें। राष्ट्र की प्रगति को सर्वोपरि समझें तथा उसमें अपनी भागीदारी हरदम निभाने को तत्पर रहें। अधिकारों के बिना कर्तव्य दासता है वहीं कर्तव्यों के बिना अधिकार निरंकुशता है, हमें अधिकारों के प्रति जागरुक रहते हुये कर्तव्य के प्रति भी सजग रहना है। राष्ट्रीयता के बोध से ही हम वैस्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रिम पंक्ति में स्थान प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं।

जय राष्ट्र, जय समाज।

दो दिवसीय प्रादेशिक अधिवेशन ११ मार्च से

मधेपुरा/ बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का ३१वां प्रादेशिक अधिवेशन स्थानीय जीवन सदन परिसर में ११ और १२ मार्च को होने जा रहा है। जिसकी तैयारी को लेकर सम्मेलन के अधिकारियों के साथ एक बैठक जीवन सदन में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रादेशिक अध्यक्ष महेश जालान ने किया। बैठक में मुख्य रूप से नवनिर्वाचित प्रादेशिक अध्यक्ष युगल किशोर अग्रवाल मौजूद रहे।

श्री जालान ने कहा कि कोसी अंचल में जहां भी मारवाड़ी समाज के लोग बसे हुए हैं उन्होंने नागरिकों से प्रगाढ व्यक्तिगत संपर्क स्थापित किए हुए हैं और इस क्षेत्र के विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं। यहां के लोगों को सस्ते उत्पाद और रोजगार के बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराना मारवाड़ी व्यवसायियों की प्राथमिकता है। यही कारण है कि देश दुनिया में जहां भी मारवाड़ी समाज के लोग बसते हैं उन्हें जन्म भूमि की जगह कर्म भूमि पुत्र के रूप में ज्यादा जाना और माना जाता है। उन्होंने कहा कोसी क्षेत्र में पहली बार ११ और १२ मार्च को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन होने जा रहा है। जिसका नाम उड़ान २०२३ नई क्षितिज की ओर रखा गया है। सम्मेलन में देशभर के समाज के अधिकारी और सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहेंगे।

अधिवेशन के संयोजक मनीष सर्राफ स्वागताध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल ने बताया कि अधिवेशन में मारवाड़ी सम्मेलन के १६२ शाखाओ के दो हजार प्रतिनिधियों के अतिरिक्त देश प्रदेश के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया है। इसी अधिवेशन के दौरान प्रतिष्ठित सामाजिक और राजनीतिक नेता नवनिर्वाचित प्रादेशिक अध्यक्ष युगल किशोर अग्रवाल आगामी सत्र के लिए अध्यक्ष पद का दायित्व ग्रहण करेंगे। वही श्री अग्रवाल ने कहा कि कोसी की प्रतिष्ठा परंपरा के अनुरूप अधिवेशन अविस्वरणीय होगा। मधेपुरा शाखा के मंत्री राजेश सुल्तानिया ने कहा कि विभिन्न व्यवस्थाओं से संबंधित समितियों का गठन कर तैयारी आरंभ कर दी गई है। रजिस्ट्रेशन प्रभारी अमर कुमार दहलान ने जानकारी दी अब तक ५०० से अधिक प्रतिनिधियों के आगमन की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। अधिवेशन के अवसर पर बिहार की जनता को राजस्थानी लोक कला और संस्कृति से परिचित कराने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाएगा जिसका संयोजक काजल चौधरी होगी।

मौके पर वरीय उपाध्यक्ष राजेश बजाज, संयुक्त मंत्री घनश्याम अग्रवाल, स्मारिका प्रभारी विकास सर्राफ, स्वागता सचिव दिलीप खंडेलवाल, राजीव सर्राफ, आनंद प्रांणसुखा, राजेश सुल्तानिया, धीरज कुमार अग्रवाल, विष्णु शर्मा, रवि शर्मा सहित अन्य मौजूद थे।

न्यूतो सगळा भाई-भैणा मायता-भायला नै!

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अपने स्थापना काल, २६ जून १९४०, से हीं बिना धर्म-वर्ग जाति-संप्रदाय का भेदभाव किए जनसेवा, समाज सुधार, व्यक्तित्व विकास और युवा एवं महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता आ रहा है।

फिलहाल बिहार प्रांत अपनी १६२ शाखाओं और लगभग ९,००० सदस्यों के माध्यम से निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण और ऊर्जा संरक्षण के अतिरिक्त नवोदित प्रतिभाओं को समुचित अवसर और साधन उपलब्ध कराने और राजस्थानी भाषा तथा मारवाड़ी पर्व-त्यौहार संस्कार एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष रूप से कार्य किए जा रहे हैं।

आपको सूचित करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है कि बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का ३१वाँ अधिवेशन आगामी दिनांक ११ और १२ मार्च २०२३ को मधेपुरा में आयोजित किया जा रहा है। अधिवेशन के दौरान युवा सत्र, महिला सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बिहार विकास पदयात्रा और पदस्थापना एवं अलंकरण समारोह जैसे अनेक कार्यक्रम संपन्न होंगे।

आपसे सदस्यों, पदाधिकदारियों एवं समाज बंधुओं विनम्र निवेदन है कि इस स्मरणीय अधिवेशन में अवश्य पधारने की कृपा करें।

– महेश जालान
अध्यक्ष, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सीए परीक्षा में श्रेया की सफलता पर किया सम्मानित

देश और दुनिया की अर्थव्यवस्था आज तेजी से विकास की ओर बढ़ रही है। नई-नई योजनाएं और संगणाएं प्रतिदिन सामने आ रही हैं। उनका सकारात्मक उपयोग करना और उनके माध्यम से किसी प्रकार का दुरुपयोग या षड्यंत्र न हो सके, इसे रोकना चार्टर्ड अकाउंटेंट की जिम्मेदारी है। मारवाड़ी समाज के प्रतिभावान युवा आज इस प्रतिष्ठित परीक्षा में बड़ी संख्या में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए विश्वास किया जाना चाहिए कि आने वाले समय में एक धोखाधड़ी रहित सुरक्षित अर्थव्यवस्था देश और दुनिया को उपलब्ध हो पाएगी। उपरोक्त बातें बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष महेश जालान ने प्रतिभा पर्व सीजन फोर के अंतर्गत पटना सिटी की बेटी श्रेया ड्रोलिया को राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया की ओर से प्रेषित सरस्वती सम्मान प्रदान करते हुए कही। ज्ञातव्य है कि बिहार से हाल हीं में घोषित परिणामों के अनुसार मारवाड़ी समाज के ४५ युवाओं ने सीए की परीक्षा में सफलता हासिल की है, जिसमें छह पटना के हैं। संदीप बबीता ड्रोलिया की बेटी और मोहन ड्रोलिया की भतीजी श्रेया हैं। सम्मेलन के प्रमंडलीय उपाध्यक्ष संजीव देवड़ा, सिटी शाखा के अध्यक्ष ईश्वर प्रसाद गोयनका, मंत्री संजय अग्रवाल और समाजसेवा शिवप्रसाद मोदी ने श्रेया को गुलदस्ता और सम्मान चिन्ह प्रदान किया तथा मिठाई खिला परिवार को बधाई दी।

समाज रत्न सम्मान प्रदान

मुंगेर प्रमंडल की शेखपुरा शाखा में बैठक हुई मिशन बागबान के अंतर्गत ९१ वर्षीय श्री लक्ष्मी नारायण जी झुनझुनवाला और ८६ वर्षीय श्री प्रभु दयाल जी झुनझुनवाला को समाज रत्न सम्मान प्रदान किया गया। प्रभु कृपा से हमारे ये दोनों अति वरिष्ठ अभिभावक पूरी तरह सक्रिय हैं और प्रतिदिन अपनी कपड़े की दुकान पर जाते हैं।

बरबीधा के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री मोहनलाल जी गिगलानिया को समाज रत्न श्री रामनिवास जी छापरिया और श्री सीताराम जी छापरिया की समाज गौरव तथा श्री अनिल जी डोकानिया को कर्मवीर सम्मान प्रदान किया गया।

लड़कियां कल की दुनिया का नेतृत्व करेंगी – अनिल अग्रवाल

मैं हाल ही में एक ऐसे विश्वविद्यालय में गया जहां लड़कियां न केवल प्रौद्योगिकी की चैंपियन हैं और विमान उड़ाती हैं बल्कि हमारी दुनिया की शीर्ष सीईओ और नेता बनने की राह पर हैं.....

भारत के सबसे पुराने महिला विश्वविद्यालय बनस्थली विद्यापीठ की मेरी यात्रा ऐसी है जिसे मैं कई वर्षों तक याद रखूंगा। मेरीमां जी ने यहीं पढ़ाई की और इसी हॉस्टल में रहती हैं जहां मैं खड़ा हूँ तो वहां जाकर ऐसा लगा जैसे किसी तीर्थ स्थान पर जा रहा हूं।

यहां मैं १७,००० लड़कियों से मिला जो अपने सपनों को साकार करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं... और मै उनकी आंखों में वह जुनून और दृढ़ विश्वास देख सकता था। ये बेटियां मिसाल हैं की महिलाएं बेहतर के लिए हमारी दुनिया बदल सकती है और बदलेंगी।

यह किसी भी कंपनी के लिए सौभाग्य की बात होगी कि ये महिलाएं अपने विकास का हिस्सा बनें और मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि हम बनस्थली से १०० से अधिक प्रतिभाशाली महिलाओं को भर्ती करने और हमारे साथ काम करने में सक्षम हैं... मुझे यकीन है कि ये उज्ज्वल युवा दिमाग सिर्फ वेदांत को ही नहीं, बल्कि हमारे भारत को भी आगे बढ़ाएंगे।

इस संस्था ने मेरे विश्वास को मजबूत किया है कि आज की दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती कल की दुनिया का नेतृत्व करेंगी...

कुमार मंगलम बिरला को पद्म भूषण मिलना मारवाड़ी समाज के लिये गर्व की बात : गाड़ोदिया

आज ही के दिन सन् १९५० को भारत का संविधान लागू किया गया और भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र बन गया, तब से २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष २०२३ में भारत का ७४वां गणतंत्र दिवस मनाया जा रहा है। यह बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद कहीं। गणतंत्र दिवस व सरस्वती पूजा की बधाई देते हुए समाज एवं राष्ट्र की चतुर्दिक प्रगति की कामना की। श्री गाड़ोदिया ने कहा कि कुमार मंगलम बिरला को पद्म भूषण सम्मान मिलना मारवाड़ी समाज के लिये गर्व की बात है। श्री गाड़ोदिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज पर लक्ष्मी की कृपा पहले से ही थी, सरस्वती की कृपा बढ़ रही है। हमारा समाज बढ़ेगा तो देश की भी प्रगति होगी। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने कहा कि मारवाड़ी समाज पर लक्ष्मी, सरस्वती की कृपा तो हो गयी है अब जरूरत है मां दुर्गा की कृपा की। श्री रुंगटा ने कहा कि आजादी के बाद मारवाड़ी समाज के एक ही परिवार के मां और बेटे श्रीमती राजश्री बिरला व श्री कुमार मंगलम बिरला को पद्म भूषण मिला हमारे लिये गर्व की बात है। हम सब मिल कर समाज व राष्ट्र के लिये काम करें।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री रतन शाह ने कहा कि आज गणतंत्र दिवस पर है पर हमारे देश का गण लुप्त हो गया पर तंत्र हमारे ऊपर हावी हो गया है। आरटीआई करिये तो भी कोई सूचना नहीं मिलती। पर हमारी सूचनायें सरकार के पास है। श्री शाह ने कहा कि सम्मेलन एक गतिशील संस्था है। संस्था बड़ी होती न कि व्यक्ति।

सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कहा कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिल्ली स्थित राजपथ का नाम अब कर्तव्य पथ हो गया। हमें भी अब कर्तव्य पथ पर चलते हुये समाज को आगे ले जाना है ताकि देश भी प्रगति करें।

पूर्व महामंत्री व समाज विकास के संपादक श्री शिव कुमार लोहिया ने कहा कि गणतंत्र दिवस पर मां सरस्वती का उदय हुआ है। आज हर घर में छोटी-छोटी बातों पर असुविधायें होने लगी है। पहले कहा जाता था कि पड़ोसी भी परिवार के ही सदस्य ही है, पर अब समय बदल गया है घर में ही पड़ोसी बन गये है। इससे समाज का निर्माण क्या होगा। आज जरुरत है कि हम अपने कर्तव्य को समझे तभी परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण होगा।

सर्वश्री आत्माराम सोंथालिया, एडवोकेट नंदलाल सिंघानिया, ओम प्रकाश अग्रवाल, रतन लाल अग्रवाल, ने भी अपनी बात रखी।

श्री गोपाल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बैठक में सर्वश्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया, दामोदर बिदावतका, पवन कुमार जालान, कैलाश प्रसाद तोदी, राधा किशन सफ्फड़, पवन बंसल, नवीन जैन, संजय शर्मा, राम प्रसाद सराफ, किशन कुमार किल्ला, प्रकाश किल्ला, काशी प्रसाद धेलिया, विष्णु अग्रवाल, संदीप कुमार

सेकसरिया, श्री विजय डोकानिया, संजय कुमार केडिया, शंकर लाल अग्रवाल, अरूण मल्लावत, यश सिंघानिया, शंकर लाल कारीवाल, ऋषभ अग्रवाल, नवीन गोपालिका सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

शुभकामनाएँ

प्रसिद्ध दवा निर्माता अमेरिकी कंपनी फाइजर की भारतीय इकाई ने सुश्री मीनाक्षी नेवटिया को अतिरिक्त एवं प्रबंध निर्देशक पद पर ५ वर्षों के लिए नियुक्त किया है। सुश्री नेवटिया एक अनुभवी एक्जीक्यूटिव है जिन्हें ३० वर्षों का दीर्घकालीन अनुभव है। उन्होंने ८ देशों में विभिन्न कंपनियों के लिए कार्य किया है।

वे कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज की स्नातक हैं एवं उन्होंने इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट अहमदाबाद से मैनेजमेंट में डिप्लोमा हासिल किया है। श्री मीनाक्षी जी को अनेकानेक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

डालमिया नगर निवासी श्री देवेंद्र कुमार गोयनका जी की दौहित्री दिल्ली पब्लिक स्कूल, बेंगलुरु की दस वर्षीय छात्रा *सुश्री आरना अग्रवाल ने "राष्ट्र स्तरीय अंतर्विद्यालय शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता" में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।* छोटी सी बच्ची की इतनी बड़ी उपलब्धि ने पूरे समाज को गौरवान्वित किया है। *आरना को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।*

टेनिस कोच कमरुद्दीन की बेटी फरहन अलीन क़मर को १०० प्रतिशत छात्रवृत्ति के साथ कैनसस स्टेट यूनिवर्सिटी, मैनहट्टन यूएसए में चयनित होने के लिए बधाई और वह यूनिवर्सिटी टेनिस टीम के लिए खेलेगी। टोंक की रहने वाली, उसने राज्य और राष्ट्रीय स्तर के टेनिस टुर्नामेंट जीतकर और टेनिस में राष्ट्रीय रैंकिंग में १५वें स्थान पर आकर राजस्थान को गौरवान्वित किया।

"ये है हमारे संस्कार"

गर्व है हमें सनातनी अरुणा जैन जी पर..अरुणा ने २५ लाख का इनाम ठुकरा दिया, पर अंडा नहीं बनाया, ये सबक है उन लोगों के लिए जो अंडा और मांसाहार खाने को अपना स्टैंडर्ड मानने लगे है।

दरअसल अरुणा को मास्टर शेफ इंडिया में टॉप-१० में आने के बाद एक नया टास्क दिया गया। इस टास्क में उन्हें डिश में अंडे को डालना था और ये जरुरी था। लेकिन अरुणा ने स्पष्ट मना किया कि वह अंडे को डिश में नहीं डालेंगी। अरुणा ने २५ लाख की इनामी दौड़ से हट ने का फैसला किया।

"ये है हमारे संस्कार"।

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कविता संग्रह का लोकार्पण व विशिष्ट उपलब्धियों के लिये प्रतिभायें सम्मानित

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा बाल प्रतिभा ग्यारह वर्षीय कवियित्री कुमारी नित्या बल्दवा द्वारा रचित आफ्टर नाइन बिफोर इलेवन कविता संग्रह का लोकार्पण कार्यक्रम रामकोट स्थित जैन भवन में शुक्रवार दिनांक २०-०१-२०२३ को सीए महेश चन्द्र लड्ढा सीआरपीएफ पोलिस सदर्न सेक्टर के महा निरिक्षक, सुप्रसिद्ध कवि पं. रामकृष्ण पाण्डेय, के साथ प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर मारवाड़ी समाज के गेस्ट्रोएनट्रोलोजिस्ट एवम लीवर ट्रान्सप्लान्ट विशेषज्ञ डा. सचिन डागा को बेस्ट डॉक्टर ऑफ साउथ इन्डिया-२०२२, ओनकोलोजिस्ट डॉ. सचिन मर्दा को डीएनबी दिल्ली द्वारा बेस्ट मेडीकल टीचर, डॉ. अजय अग्रवाल को एडमिनिस्ट्रेटीव हेड ऑफ वर्ल्ड कमुनिकॅर काउन्सिल मनोनीत होने पर, विशिष्ट उपलब्धियों पर सम्मान किया गया। साथ में निमंत्रण केटरर के प्रताप जडेजा का केॅरर एसोसिएशन के अध्यक्ष एवम रामप्रकाश भन्डारी का मंत्री निर्वाचित होने पर पारसमल रांकाका तेलंगाना प्रदेश पॉन ब्रकर्स एवम ज्वेलर्स के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने पर सम्मान किया गया। इसके साथ मास्ॅ तजस मूंदडा द्वारा सम्पूर्ण भारत में सीए इन्ॅर परीक्षा में पाँचवा रैंक हासिल करने पर अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुये एवम उपस्थित समाज बन्धुओं के साथ सम्मानग्रहिताओं का स्वागत करते हुये प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने कहा कि अपने लक्ष्य को वही प्राप्त कर सकता है जिसे लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ नजर ही नहीं आता। एक शताब्दी से अधिक समय से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर रचनात्मक कार्यों से एक सुदृढ़ संगठन के रूप में अपनी सार्थकता सिद्ध कर रहा है। सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वहन की प्रबल भावना के साथ कर्तव्य निष्ठ व समर्पित वरिष्ठजनों का सम्मान जन मानस को सत्कार्य एवम समर्पित प्रयासों के लिये प्रेरित करता है। समाज कि विशेषज्ञों ने अपने समर्पण और लगन से जो उपलब्धि प्राप्त की ऐसे कई कीर्तिमान और स्थापित करेंगे। जिन पदों पर समाज बन्धुओं का निर्वाचन हुआ है वे संस्थायें उनके कार्यकाल में सराहनीय कार्य करेगी। इतना ही नहीं इन उपलब्धियों से समाज के लोगों को भी कुछ कर दिखाने की प्रेरणा मिलेगी।

कार्यक्रम की संयोजिका पुष्पा बूब ने सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम के बारे में बताते हुये कहा कि न केवल प्रादेशिक स्तर पर अपितु राष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मेलन उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति एवं राजस्थानी साहित्य को प्रोत्साहित करने पुरस्कार प्रदान करता है।

सीएस सुमन हेडा ने बाल कवियित्री नित्या बल्दवा का परिचय देते हुये बताया कि साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन मात्र आठ साल की आयु से ही दिखाने लग गयी तथा देश विदेश में इनकी काव्य कला एवं रचनाओं से सराहना एवम प्रोत्साहन प्राप्त किया है।

कुमारी नित्या ने अपने कविता संग्रह स एक कविता का पाठ कर अपनी रचनाओं के विषयक्रम की जानकारी दी। पं. रामकृष्ण पाण्डेय ने नित्या बल्दवा की काव्य प्रतिभा की सराहना करते हुये कहा कि माँ सरस्वती का आशीर्वाद उसकी रचनाओं को नया आयाम प्रदान करेगा।

डॉ. शंकरलाल बलदवा एवं डॉ. सचिन मर्दा ने सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुये आभार प्रदर्शन किया कि ऐसे आयोजन से लोगों को भी प्रेरणा मिलती है। डॉ. सचिन डागा ने सम्मान के लिये आभार प्रदर्शन करते हुये स्वस्थ शरीर के लिये पोषित एवं संतुलित आहार के साथ अनुशासित जीवन शैली का महत्व बताया।

कार्यक्रम का संचालन प्रादेशिक सम्मेलन के महामंत्री रामप्रकाश भंडारी ने किया। आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रादेशिक समाचार : उत्तराखंड

अनाथ एवं बेसहारा कन्याओं के साथ ध्वजारोहण

उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से २६ जनवरी २०२३ को मात्र आँचल कन्या विद्या पीठ (राजा गार्डन) में वास कर रहे १५० अनाथ एवं बेसहारा कन्याओं के साथ ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें बच्चों के साथ मिठाई, नास्ता, बिस्किट, फल के साथ-साथ कॉपी, पेन, पेंसिल और उनकी सुरक्षा को देखते हुए कैप और जुराब भी वितरण किया गया। बच्चों ने भी रंगारंग कार्यक्रम हम सब के बीच प्रस्तुत किया जो कि काफी सराहनीय रहा और जिस किसी भी टीम का प्रोग्राम अच्छा लगा उन बच्चों को इनाम देकर उनके मनोबल को बढ़ाया गया।

नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर

उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा दिनांक १९.०२.२३ वार रविवार को मंत्रा हैप्पी होम, सिडकुल हरिद्वार में निर्मल आई केयर के सहयोग से एक नि:शुल्क आंख चेकअप एवं आंख ऑपरेशन कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग १८० लोगों के आखों का परीक्षण कुशल चिकित्सक टीम के द्वारा किया गया। जिसमें १५ लोगों के आखों का ऑपरेशन भी करवाया गया है। इस नेक कार्यक्रम के संयोजक श्री विनोद जी अग्रवाल ने काफी सराहनीय प्रयास किया और पूरे उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यों ने इसे पूर्ण रूप से सफल बनाने में अतुलनीय योगदान दिया।

राजस्थानी प्रचारिणी सभा एवं राजस्थान सूचना केंद्र, कोलकाता द्वारा केन्द्र के सभागार में आयोजित राजस्थानी मातृ भाषा दिवस पर वक्तव्य रखते हुए सभा के अध्यक्ष श्री रतन शाह, मंचस्थ हैं, श्री घनश्याम सोभासरिया, श्री प्रह्लाद राय गोएनका, श्री राजेंद्र केडिया, श्रीमती शशि लाहोटी। राजस्थानी भाषा के लेखक श्री बंशीधर शर्मा, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका सहित अन्य ने अपने विचार रखे। श्री संदीप ने धन्यवाद ज्ञापन किया। केंद्र के सहायक निदेशक श्री हिंगलाज दास रतनू ने सबका स्वागत किया।

समाचार सार : नेपाल

मारवाड़ी सेवा समिति नेपाल काठमांडू की ७०वीं वर्षगांठ के अवसर पर राजेन्द्र खेतान सहित समाज के कई वरिष्ठ सदस्यों को माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा सम्मानित किया गया है। धन्यवाद मारवाड़ी सेवा समिति नेपाल।

प्रादेशिक समाचार : पूर्वोत्तर

जोरहाट केंद्रीय कारागार के कैदियों के लिए मच्छरदानी का वितरण

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा व मंथन लेडीज क्लब के सहयोग से जोरहाट केंद्रीय कारागार में कैदियों की सुविधा के लिए २०५ मच्छरदानियां प्रदान की गई। दरअसल कुछ दिनों पूर्व जब युवा समाजसेवी व पूर्व पाषंद अंकुर गुप्ता जेल में थे, तब उन्होंने कैदियों की आंखों की बीमारियां, शौचालयों के टूटे दरवाजों व कैदियों के लिए मच्छरदानियों की कमी को करीब से महसूस किया था।

जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा के पदाधिकारियों को इन अभावों की जानकारी दी व इसके साथ ही अपनी ओर से शौचालयों के नए दरवाजें लगवाए। इसके बाद पिछले तीन दिसंबर को सम्मेलन की ओर से कारागार में लगाए गए नेत्र जांच शिविर के दौरान भी सम्मेलन से जुड़े लोगों ने कैदियों के लिए मच्छरदानियों के अभाव को महसूस किया और इस कमी को दूर करने में सहयोग करने का निर्णय लिया।

आज के कार्यक्रम के दौरान कारागार अधीक्षक अबनी कुमार मुक्तियार व जेलर प्रांजल कुमार शर्मा के हाथों में ये मच्छरदानियां सौंपी गई।

इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष अनिल केजड़ीवाल, मंत्री नागर रतावा, कार्यकारिणी सदस्या शांति मालपानी, पूर्व पार्षद अंकुर गुप्ता, मंथन लेडीज क्लब की सदस्याओं में अदिति भड़ेच, ज्योति जैन, ज्योति अग्रवाल, नितु चौधरी, सरोज लड्ढा व स्नेहलता गुप्ता उपस्थित थी। इस नेक कार्य के लिए जेल अधीक्षक एवं जेलर दोनों ने ही अपने संबोधन में सम्मेलन एवं मंथन लेडीज क्लब को धन्यवाद दिया।

प्रादेशिक समाचार : झारखंड

मारवाड़ी युवा मंच देवघर कैंपस में मारवाड़ी समाज की सभी संस्था सामूहिक रूप से झंडोत्तोलन किया। झंडोत्तोलन मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष अनुज धानुका द्वारा किया गया। उक्त अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रमंडलीय उपाध्यक्ष शिव सर्राफ जिलाध्यक्ष वासुदेव गुटगुटिया शाखा अध्यक्ष सरवन थवाल एवं समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

आज राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर दुमका जिला मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यों द्वारा सुदूर ग्रामीण अंचल बेदिया में ग्रामीणों के बीच कंबल का वितरण किया गया।

संयोजक श्री महेश कुमार नारनोली जी के नेतृत्व में सम्मेलन परिवार के कई गणमान्य सदस्यों ने अपनी भूमिका निभायी। जिसमें मुख्य रूप से श्री हरि शंकर मोदी जी, प्रदीप दारूका जी, अरूण मोहंका जी, दिलीप भुवानियां जी, लोकेश दारूका जी, सुदीप अग्रवाल जी, गौरी शंकर दारुका जी एवं पृथ्वी राज मोदी एवं राजेंद्र मेहरिया की भूमिका रही।

होली में उपाधियों का

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया	दायित्व बोध
सीताराम शर्मा	बहुआयामी
नंदलाल रूँगटा	हितचिंतक
डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया	आध्यात्मिक
रामअवतार पोद्दार	अनुभवी
पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला	सकारात्मक सोच
संतोष सराफ	सम्मेलन का झंडा
संजय कुमार हरलालका	अलग पहचान
भानीराम सुरेका	समाजसेवी
डॉ. श्याम सुंदर हरलालका	चिंतनशील
पवन कुमार गोयनका	भोर का सूरज
पवन कुमार सुरेका	पुराने खिलाड़ी
अशोक कुमार जालान	अपनापन
विजय कुमार लोहिया	दक्षिणपंथी
गोपाल अग्रवाल	भाई साहब
सुदेश कुमार अग्रवाल	बिजी परसन
बसंत कुमार मित्तल	अति उत्साही
दामोदर प्रसाद बिदावतका	कोई चिंता कोनी
चांदमल अग्रवाल	सीधी बात
रमेश कुमार बंग	हैदराबादी नवाब
महेश जालान	नया आकाश
विजय कुमार संकलेचा	यारों का यार
राज कुमार पुरोहित	ऊँची सोच
ओम प्रकाश खण्डेलवाल	जिन्दादिल
लक्ष्मीपत भूतोड़िया	मौके की बात
गोविंद अग्रवाल	सोचने की बात
संतोष खेतान	सक्रियता की ओर
गोकुल चंद बजाज	सज्जन व्यक्तित्व
पुरुषोत्तम सिंघानिया	मधुर मुस्कान
श्रीगोपाल तुलस्यान	सुलझे विचार
विजय कुमार गोयल	सुसंस्कृत
डॉ. सुभाष अग्रवाल	आन-वान-शान
श्याम सुंदर अग्रवाल	काम से काम
पोडेश्वर पुरोहित	नेपथ्य में
राम प्रकाश भंडारी	कुछ करना है
योगेश तुलस्यान	साइलेन्ट वर्कर
रवि शंकर शर्मा	राम लखन
निकेश गुप्ता	मूकदर्शी
अशोक कुमार अग्रवाल	समर्पित
ओम प्रकाश अग्रवाल	राजधानी की आवाज
जयदयाल अग्रवाल	जय जगन्नाथ
संजय जाजोदिया	उभरता चेहरा
डॉ. जुगल किशोर सराफ	संरक्षक
आत्माराम सोन्थलिया	आदर्श समाजसेवी

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
शिव कुमार लोहिया	नये क्षितिज की ओर
रतन लाल शाह	ओल्ड इज गोल्ड
विवेक गुप्त	प्रियदर्शी
आनंद कुमार अग्रवाल	सहयोगी
रघुनंदन मोदी	रिफाईंड
राहुल अग्रवाल	कर्मठ
अमर बंसल	अपनी पहचान
टीकम चंद सेठिया	गतिविधियों की तलाश
मुरारी लाल सोंथलिया	मैं क्या करूं
शिव कुमार टेकरीवाल	उत्साही
भावेश चाण्डक	देखते हैं
राजकुमार तिवाड़ी	जनहित में
रंजीत कुमार जालान	नई उर्जा
संदीप कुमार सिंघल	अतिथि सत्कार
पवन कुमार शर्मा	सीधी बात
नंद किशोर अग्रवाल	वाह ताज
उमाशंकर अग्रवाल	बनारसी अंदाज
अशोक केडिया	सबका भला
जगदीश गोलपुरिया	युवा तुर्क
अशोक कुमार मुँधड़ा	नयी सोच
कपिल लखोटिया	युवा सोच
मीरा बथवाल	आधी आबादी की बात
रूपा अग्रवाल	बढ़ते कदम
दीपक कुमार लखोटिया	मेरे अपने
सुरेन्द्र भट्टर	युवा नेतृत्व
रेखा लखोटिया	सबल नेतृत्व
रामपाल अट्टल	विश्वसनीय
अरुण कुमार सुरेका	हितैषी
अशोक कुमार गुप्ता	मधुर मुस्कान
अशोक कुमार तोदी	प्रभु कृपा
अतुल चुड़ीवाल	साहित्यिक
बाबूलाल घनानिया	भारतीय संस्कृति
बनवारीलाल शर्मा (सोती)	समाज की चिंता
भागचंद पोद्दार	सदाबहार
विनय सरावगी	प्रवीण
विनोद तोदी	सक्रिय
विश्वनाथ भुवालका	प्यारा इंसान
दीपक जालान	कलमकार
दीन दयाल गुप्त	स्पष्टवादी
दिनेश कुमार जैन	उदीयमान
हरिप्रसाद बुधिया	नेक नीयत
जगदीश प्रसाद चौधरी	साथ-साथ है
जगदीश प्रसाद शर्मा	मददगार

मुक्तहस्त वितरण

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
जुगल किशोर जाजोदिया	सरल-सहज
कैलाशपति तोदी	बहुत कुछ करना है
मधुसुदन सिकरिया	सुलझे विचार
महावीर प्रसाद अग्रवाल	राम जी की कृपा
नंदलाल सिंघानिया	तराजू का पलड़ा
नारायण प्रसाद डालमिया	सज्जन
पवन कुमार जालान	स्वास्थ्य की कमान
राज कुमार केड़िया	धीर-गम्भीर
राज कुमार मिश्रा	मिलन सार
रमेश कुमार बुबना	सर्वजन हिताय
रतन लाल बंका	कलम का सिपाही
रविन्द्र चमड़िया	सम्मेलन प्रेमी
सजन कुमार बंसल	समाज की सेवा
सज्जन भजनका	प्रगतिशील
संदीप फोगला	शिक्षा प्रेमी
श्रीकुमार बांगुड़	बड़ी सोच
सुशील कुमार अग्रवाल (धनानिया)	परम स्नेही
सुषमा अग्रवाल	गरिमापूर्ण
अनिल कुमार जाजोदिया	लाइफ कोच
अशोक कुमार जैन	परोपकारी
बनवारी लाल मित्तल	अलग राह
भरत कुमार जालान	पुराना घी
ब्रह्मनंद अगरवाला	पुराने सिपाही
धर्मचंद जैन (रारा)	सबल योगदान
गौरी शंकर अग्रवाल	समय का तकाजा
गोविंद सारडा	लगा हुआ हूँ
जोधराज लड्ढा	आउट ऑफ टच
कमल कुमार दुगड़	शाही अंदाज
कमल नोपानी	सम्मेलन के सिपाही
केदार नाथ गुप्ता	आशावादी
किशन गोपाल मोहता	टाइम नहीं है
किशन लाल चौधरी	दयालु
ममता बिनानी	लोकप्रिय
मनीश डोकानिया	हंसमुख
मुरारी लाल खेतान	आगे की सोच
निर्मल कुमार झुनझुनवाला	मृदु मुस्कान
निर्मल कुमार कावरा	घणी खम्मा
ओम प्रकाश पोद्दार	जय दादी की
डॉ. ओम प्रकाश प्रणव	खरी-खरी
प्रेम चंद सुरेलिया	रिटायर्ड
पुष्पा भुवालका	कर्मठ
रमेश कुमार सरावगी	सुलझे विचार
रतन लाल अग्रवाल	लगा हुआ हूँ

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
डॉ. सावर धनानिया	मैं हूँ ना
उमेश शाह	मंजिल की तलाश
प्रह्लाद राय गोयनका	गंगधारा
नवीन गोपालिका	पाक इरादे
प्रशांत खण्डेलिया	जोशो-खरोश
शिव कुमार अग्रवाल	हिस मास्टर्स वायेस
पन्ना लाल वैद्य (दिल्ली)	जैंटलमैन
कैलाश कावरा (गुवाहाटी)	नई मंजिलें
रमेश चंद गोपी किशन बंग (महाराष्ट्र)	दिलदार
जय प्रकाश मुधड़ा (महाराष्ट्र)	यादों के झरोखे
वीरेंद्र कुमार धोखा (महाराष्ट्र)	नेक इरादे
जय प्रकाश अग्रवाल (गुजरात)	बड़ी लकीर
नकुल अग्रवाल (उत्कल)	सौम्य
श्याम सुंदर अग्रवाल (उत्कल)	भद्र मानुष
मनोज जैन (उत्कल)	ऑल इज वेल
ओम प्रकाश अग्रवाल (कोलकाता)	सदैव तत्पर
ओम प्रकाश अग्रवाल (झारखंड)	मधुर मुस्कान
विजय किशोरपुरिया (बिहार)	प्रिंस ऑफ वेल्स
जुगल किशोर अग्रवाल (बिहार)	बिहार की बागडोर
राजेश बजाज (बिहार)	साथी हाथ बढ़ाना
सुरेश चौधरी (छतीसगढ़)	सबके साथ
कमलेश नाहाटा (मध्य प्रदेश)	अनूठा अंदाज
गणेश नारायण पुरोहित (मध्य प्रदेश)	जय श्रीराम
सोम प्रकाश गोयनका (उत्तर प्रदेश)	एक्सक्लूसिव
आकाश गोयनका (उत्तर प्रदेश)	राजकुमार
विजय गुजरवासिया (पबं)	तीरंदाज
विजय डोकानिया (पबं)	सोचने की बात
विश्वम्भर नेवर	समाज की सोच
अरुण अग्रवाल (गुवाहाटी)	संगठनकर्ता
राजकुमार तिवारी (गुवाहाटी)	आगे बढ़ना है
सज्जन शर्मा (दिल्ली)	करके दिखाना है
निर्मल सराफ (कोलकाता)	सामाजिक योगदान
प्रकाश चंद अग्रवाल (विश्वमित्र)	मल्टीडायमेंशनल
नरेंद्र तुलस्यान (कोलकाता)	भरोसेमंद
राम प्रसाद सराफ	हम भी है
चम्पा लाल सरावगी	गुड मार्निंग
धर्मचंद अग्रवाल	योगी राज
कमल कुमार सिंघानिया	चलते-चलते
आत्माराम कजारिया	सद्विचार
श्याम सुन्दर बेरीवाल	बिहारी जी की कृपा
द्वारका प्रसाद गनेड़ीवाल	अनुकरणीय
प्रदीप जिवराजका	विचारशील

शाखाओं के सशक्तिकरण पर चर्चा

दिनांक २९ जनवरी २३ रविवार को पूप्रमास के मण्डल 'ग' की एक प्रतिनिधि सभा मण्डल 'ग' के उपाध्यक्ष श्री छतरसिंह जी गिड़िया की अध्यक्षता में अनुष्ठित हुई। सभा का मुख्य विषय था **"शाखाओं के सशक्तिकरण – संभावनाओं की तलाश"**। चर्चा के सूत्रधार थे साहित्य सृजन व विकास समिति के संयोजक **श्री उमेश जी खंडेलिया** जिन्होंने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में प्रांतीय अथवा राष्ट्रीय संगठन की मजबूती में शाखाओं के सशक्तिकरण की अहम भूमिका पर प्रकाश डाला। इन्होंने कहा संगठन की शाखाएं मजबूत होंगी, तभी संगठन सशक्त होगा। पूर्वोत्तर में सम्मेलन संगठनात्मक रूप से शक्तिशाली हो इसके लिए शाखाओं के बीच में इस विषय पर विचार मंथन होना चाहिए।

उपस्थित सदन ने तद-अनुरूप परिचर्चा में भाग लेते हुए अपने अपने विचार प्रकट किये, जिसका सारांश कुछ इस प्रकार है :–

१. आजकल संयुक्त परिवार लगभग बिखरने लगे हैं और एकल परिवार का दायरा बढ़ रहा है। जब परिवारिक सदस्यों द्वारा परिवारिक संगठन ही टूटने लग रहे हैं, तो सामाजिक संगठन को सशक्त करना एक सपने जैसा है।
२. हमारे मंडल की अधिकतर शाखाएं (एक-दो को छोड़कर) न्यून संख्यक परिवारों के सदस्यों से गठित है। साथ ही समाज में अलग-अलग संप्रदाय तथा धार्मिक - घटकों की संस्थाओं का होना स्वाभाविक है कि सदस्यों का अपनी धार्मिक, या समुदाय घटक संस्था के प्रति अधिक आग्रहित होकर वृहतर मारवाड़ी समाज हित के लिए गठित संगठन के विपरीत संबंधित घटक संस्था के साथ जुड़ना।
३. परिपाटी अनुसार कोई भी संगठन की शाखा या मंडल अथवा प्रांतीय इकाई एक नेतृत्व - प्रधान के निर्देशन में ही संचालित होती है। उक्त संगठन द्वारा सर्वसम्मति से ग्रहित किसी भी कार्यक्रम को क्रियान्वयन करने का समस्त अधिभार उस नेतृत्व प्रधान अथवा निर्देशक पर डाल दिया जाता है। कदाचित कोई त्रुटि रह जाय, अथवा असफल हो जाय तो नेतृत्व को ही दोषारोपित करते हैं, जबकि उक्त उत्तरदायित्व नेतृत्व के अलावा पूरी समिति व सदस्यों की होती है।
४. किसी भी संगठन में नेतृत्य की कभी-कभी पक्षपात वाली प्रवृति भी अपघात होती है।
५. सशक्तिकरण के पक्ष में भी कुछ सुझाव सदस्यों द्वारा अभिभाषित हुए जैसे कि:– संगठन संबंधित अनहित या सामाजिक कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने का उत्तरदायित्व यद्यपि नेतृत्व प्रधान का है, मगर योगदान पूरी समिति का होता है। अत: नेतृत्व को उसकी वाह-वाह स्वयं ना लेकर पूरी समिति को देना चाहिए, जिससे आपसी सद्भावना की वृद्धि होंगी तो संगठन को मजबूती लिगी। सब को साथ लेकर कार्य करने की भावनाएं / प्रणाली संगठन को मजबूत करती है।
६. कुछ प्रतिनिधियों अपने अनुभव का उदाहरण देते हुए कहा कि सामाजिक ढांचे में प्राय: सभी परिवारिक सदस्यों की स्वरुचि अनुसार कार्यक्षेत्र हैं। तकनीकी विकास के माध्यम से वे सभी अपने परिवार से जड़ित रहते हैं। उसी तरह संगठन की टहनियां भी मूल वृक्ष से जुड़ी रहकर संगठनात्मक परिचर्चा करती रहे, तो सशक्तिकरण को बल मिलेगा। अत: अति आवश्यक है कि वेबसाइट जैसी तकनीकी विकास को संगठन में शामिल किया जाना चाहिए।
७. आज की महिला वर्ग पूर्व की अपेक्षा अधिक शिक्षित तथा जागृत है। कार्य सक्षम तो महिला वर्ग पूर्व से ही है। अत: संगठन में उनका चतुर्दिक (श्रम, समय, संवाद एवं सुझाव का) योगदान हो तो सशक्तिकरण में संशय नहीं है।
८. कभी कभी लोग अपने अहम को बड़ा मुद्दा बना लेते हैं, और अपने मान अपमान की बातों को लेकर संगठन को नुकसान पहुँचाते हैं। जबकि सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता को यश-अपयश की चिंता किए बगैर समाज हित में, संगठन हित में, कार्य करना चाहिए। कार्य करते समय इस मनोवृति को कैसे दूर किया जाए व समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता कैसे तैयार किए जाए यह महत्वपूर्ण विषय है।

विषय चर्चा के समापन पर सूत्रधार उमेश जी ने आज के विचार मंथन से खुशी प्रकट करते हुए कहा कि हमारे मंडल की सभी शाखाएं एकमत से संगठन के सशक्तिकरण के पक्षधर होकर चिन्तित है। आज की इस परिचर्चा से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि शाखा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को सामाजिक कार्य के लिए प्रशिक्षित (Schooling) करने के लिए कार्यशालाएं आयोजित करना आवश्यक है, जैसा कि पिछले कोरोना काल में हमारे मंडल "म" में जूम (Zoom) के माध्यम से ऐसी दो कार्यशालाएं आयोजित की गई जो काफी सराहनीय रही थी। अत: हमें इसके प्रति सचेष्ट होकर, भिन्न भिन्न विषय पर कार्यशाला आयोजित करनी चाहिए।

अपने अध्यक्षीय मन्तव्य में श्रीमान गिड़िया जी ने धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया। उन्होंने सभासदों को प्रेरणा देते हुए कहा कि परिवार हित हो या समाज हित, हमें अपनी सोच सदैव सकारात्मक रखना चाहिए, तभी हम उचित निर्णय ले पाएंगे। क्योंकि किसी भी कार्य को– कैसे करना है? यह सोच समाधान देती है, मगर - यह कैसे होगा? यह सोच कार्य की सफलता में संदेह पैदा करती है।

तत्पश्चात सह सचिव दुर्गा दत्त राठी ने आज की सभा में अपनी सक्रिय उपस्थिति प्रदान करके आयोजन को सफल बनाने हेतु प्रांतीय सदस्य श्री हीरालाल जी अग्रवाल, श्री राजकुमार जी सर्राफ, श्री मानिक लाल जी दम्माणी लखीमपुर के विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, व समाज सेवाभावी श्री राजेश जी मालपानी और अपने मंल की सभी शाखा के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करके सभा समापन की घोषणा की।

मारवाड़ी सम्मेलन का प्रांतीय अधिवेशन २५-२६ मार्च को

गुवाहाटी - पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन का सोलहवां प्रांतीय अधिवेशन सम्मेलन की कामरूप शाखा के आतिथ्य में आगामी २५ और २६ मार्च को फैंसी बाजार स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित किया जाएगा। प्रांतीय अध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल ने उक्त घोषणा करते हुए कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा द्वारा अधिवेशन आयोजित करवाने के लिए आतिथ्य शाखा कदा दायित्व ग्रहण करने संबंधो प्रस्ताव पर विचार करके शाखा के अनुरोध को स्वीकृति प्रदान की गई। इस विषय पर कामरूप शाखा के अध्यक्ष विनोद लोहिया की अध्यक्षता में कामरूप शाखा कोर कमेटी की एक विशेष बैठक आयोजित कर आगामी अधिवेशन पर चर्चा करते हुए शाखा के संस्थापक अध्यक्ष संपत मिश्र को स्वागताध्यक्ष के रूप में चयन किया गया। इसके अलावा पूर्व शाखा अध्यक्ष पवन जाजोदिया को स्वागत मंत्री के रूप में तथा सीए संजय घिरिया को कोषाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। इसके अलावा पूर्व शाखा अध्यक्ष निरंजन सिकरिया और पूर्व शाखा मंत्री मनोज काला को उप स्वागताध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। सम्मेलन की पूर्वोत्तर स्थित सभी मंडल के उपाध्यक्ष को उनकी सहमति से स्वागत अध्यक्ष बनाया जाने का प्रस्ताव भी लिया गया। यह अधिवेशन समरसता पर्व के नाम से आयोजित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि उक्त नामकरण सम्मेलन की डिब्रूगढ़ शाखा के आतिथ्य में होने वाले अधिवेशन के लिए निश्चित किया गया था। मगर कोरोना संक्रमण काल के चलते यह अधिवेशन डिब्रूगढ़ में आयोजित नहीं हो सका था। अधिवेशन को सुचारू रूप से चलाने के लिए कई उप समितियों का गठन भी किया गया। इस अवसर पर प्रांतीय मुखपत्र सम्मेलन समाचार को अधिवेशन विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। अधिवेशन में प्रतिनिधि पंजीकरण शुल्क ११ सौ रुपये निर्धारित किए गए। मारवाड़ी समाज के विशिष्ट व गणमान्य व्यक्तियों को संरक्षण सदस्य के रूप में स्वागत समिति द्वारा चयन किया जाएगा। अधिवेशन की घोषणा होते ही कामरूप शाखा के सदस्य एवं स्वागत समिति मे इस अधिवेशन को ऐतिहासिक और यादगार अधिवेशन बनाने के लिए उत्साह का माहौल पैदा हो गया है।

क्षितिज के उस पार

– प्रेमलता खंडेलवाल "हरि-प्रिया"

क्षितिज के उस पार
कौन रहता है–मैं बता दूं?
देखा है क्या–
तुमने कभी उड़ते वायुयान में–
बादलों के ऊपर या
सागर के आर-पार? नहीं!
मैंने देखा है – प्रभु को
गरीब की दो वक्त की रोटी की चाह में
प्यासे मुसाफिर की गहरी प्यास में
विवश गूंगे की पुकार में
सूरदास की दासता में
प्रेमी की विरह-व्यथा में
कवि की भावनाओं में
मां की ममतामयी छाया में
दयावान मनुष्य की दया में
गुरु की आज्ञा में
कृष्ण की चतुराई में
राम की मर्यादा में
हां–मैंने उसे
झाकते हुए देखा है–
कलाकार के संगीत में
मार्गदर्शक की वाणी में
संतों की समाधि में
दानवीर के दान में
गृहस्थ के जीवन में
गीता के सार में
हां – मैंने देखा है उसे
गाते हुए–
बगीचे की बहार में
हवा के झोंके में
प्यार के तराने में
शायर की शायरी में
गायक के गायन में
साधक की साधना में
हां–मैंने देखा है उसे हंसते हुए–
प्रेम के प्रेम में!

प्रादेशिक समाचार : मध्यप्रदेश

नए सत्र की शुरुआत सेवा कार्य से

मध्यप्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ७४वें गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी के अवसर पर नये सत्र की शुरुआत सेवा कार्य से प्रारंभ की गई।

मेडिकल कॉलेज परिसर में सुदामा थाली (भोजन वितरण) का कार्यक्रम प्रदेश अध्यक्ष श्री विजय संकलेचा के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। इस सुअवसर पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री कमलेश नाहटा, अग्रवाल सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाश अग्रवाल (बब्बा जी), श्री दिलीप अग्रवाल, श्री मुरली अग्रवाल, श्री श्यामसुन्दर माहेश्वरी, संघवी सेवा समिति के उपाध्यक्ष श्री मयूर संघवी, श्री तपस्वी लाल बागमार, श्री पद्म चोपड़ा, श्री पद्म बोथरा आदि ने सेवाकार्य में भरपूर सहयोग प्रदान किया। मेडिकल अस्पताल में भर्ती मरीजों के सैकड़ों रिश्तेदारों को नि:शुल्क भोजन प्रदान किया गया स्वादिष्ट जायकेदार भोजन पाकर सभी के चेहरे खिल उठे।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विजय सकलेचा ने संघवी सेवा समिति-म.प्र. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के उपस्थित एवं सहयोग प्रदान करने वाले सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

मध्यप्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के बैनर तले करीब तीन सौ लोगों को गणतंत्र दिवस के अवसर पर मेडिकल कॉलेज सुदामा थाली में मरीजो के परिवार वालों को नि:शुल्क स्वादिष्ट भोजन कराने पर श्री विजय संकलेचा और उनकी टीम को बहुत बहुत बधाई।

प्रादेशिक समाचार : कर्नाटक

दिव्यांग बच्चों के साथ मनाया गणतंत्र दिवस

महिला परिधि संबद्ध कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने ७४वां गणतंत्र दिवस विश्व शांति निकेतन में महिला परिधि की अध्यक्ष माया अग्रवाल द्वारा दिव्यांग बच्चों के साथ तिरंगा झंडा फहरा कर मनाया।

महिला परिधि की टीम ने दिव्यांग बच्चों के लिए १० बिजली के पंखे दिए और उनके साथ भोजन किया। इस अवसर पर महिला परिधि की अध्यक्ष माया अग्रवाल के अलावा मुख्य सलाहकार मंजू अग्रवाल, संयोजक सविता गुप्ता, महामंत्री शालिनी अग्रवाल के अलावा हेमलता अग्रवाल, विनीता अग्रवाल, निर्मला गोयल, आशा मित्तल और मनीषा अग्रवाल मौजूद थी और सभी ने बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम देखा। इस अवसर पर कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री शिवकुमार टेकरीवाल जी भी उपस्थित थे।

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments
- Radiology

- MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
- Ultrasonography | - Colour Doppler Study

- Cardiology

- ECG | - Echo-Cardiography
- Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
- Treadmill Test (TMT)

- Wide Range of Pathology
- Pulmonary Function Test
- UGI Endoscopy / Colonoscopy
- Physiotherapy
- EEC / EMG / NCV
- General & Cosmetic Dentistry
- Elder Care Service
- Sleep Study (PSG)
- EYE / ENT Care Clinic
- Gynae and Obstetric Care Clinic
- Haematolgy Clinic
- Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep
- Health Check-up Packages
- Online Reporting
- Report Delivery

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Yours Tastefully
Anmol
हर पल अनमोल
हर घर अनमोल
www.anmolindustries.com | Follow us on:

प्रादेशिक समाचार : कर्नाटक

महिला परिधि सेवा कार्यों में अग्रसर

कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की शाखा महिला परिधि की अध्यक्षा श्रीमती माया अग्रवाल ने बताया कि उनके और उनकी परिधि टीम के २३ सदस्यों द्वारा ०२ माह (जनवरी व फरवरी, २०२३) में ३८ नए सदस्यों को कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की शाखा महिला परिधि टीम से जोड़ा गया तथा माह जनवरी, २०२३ में दो बड़ें कार्यक्रम किए।

महिला परिधि टीम का पहला कार्यक्रम संक्रांति के उपलक्ष्य में १३ जनवरी, २०२३ को अन्नपूर्णा सेवा अनाथ आश्रम में किया, जिसमें उनकी टीम द्वारा घर के बने व्यंजन बच्चों को परोसे गए और साथ में जैकेट और कम्बल बच्चों को दिए। खेलने के लिए खेल का सामान और खाने के बैग वितरित किए गए। अनाथ आश्रम को ०६ माह का राशन व ०१ माह की टॉयलेट्री का पूरा समान दिया गया साथ में फल आदि भी बच्चों को वितरित किए गए।

उन्होनें बताया महिला परिधि टीम का दूसरा कार्यक्रम गणतंत्र दिवस व बसंत पंचमी के उपलक्ष में विश्व शांति निकेतन के सचिव माननीय श्री गौरी शंकर जी के आमंत्रण पर विश्व शांति निकेतन आश्रम में किया गया। कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, महिला परिधि अध्यक्षा श्रीमती माया अग्रवाल और कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, (महामंत्री) श्री शिव कुमार टेकरीवाल जी ने ट ीम के सभी सदस्यों के साथ झण्डा रोहण किया तथा बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर प्रतिभोज का आयोजन किया। इस अवसर पर दिव्यांग बच्चों ने भावपूर्ण रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, महिला परिधि टीम की सदस्याएं उपस्थित थी, नें १० पंखे वितरित करते हुए बच्चो का मनोबल बढ़ाया।

महिला परिधि अध्यक्ष ने बताया कि उनका आगामी तीसरा कार्यक्रम गंगौर की पूजा का आयोजन दिनांक २३ मार्च, २०२३ को अग्रसेन भवन, बेंगलोर में होना निश्चित हुआ है, जिसके आयोजन हेतु कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की शाखा महिला परिधि टीम पूरी निष्ठा के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम व गंगौर पूजा से जुड़ी अन्य तैयारियों में लगी हुयी है।

उन्होंने कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभी सदस्यों व डॉ. सुभाष अग्रवाल (अध्यक्ष) जी का उनके पूरे सहयोग व योगदान व कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, महिला परिधि टीम का मनोबल बढ़ाने व कार्यकाल को सफल बनाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

परिधि टीम की अध्यक्षा ने यह घोषणा की कि वे अपनी कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, महिला परिधि टीम के सभी सदस्यों के साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का वहन करने के साथ-साथ मारवाड़ी समाज को बुलंदी तक ले जाने के लिए पूरे कर्तव्य परायणता और निष्ठा के साथ अपना सम्पूर्ण योगदान देने के लिए हमेशा तत्पर है।

प्रादेशिक समाचार : छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा २६ जनवरी के उपलक्ष में ध्वजारोहण।

विधवाओं और विधुरों को मिले स्वयंवर में मौका

– भानीराम सुरेका
राष्ट्रीय उपाध्यक्षः अखिल भारतवर्षीय
मारवाड़ी सम्मेलन

आम तौर पर हम देखते हैं कि बहुत सी संस्थाएं समय-समय पर विशेष समाज के लिए विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन आयोजित कराती है जहां उस समाज के युवक-युवती एकत्रित होकर अपने लिए सुयोग्य जीवन साथी की तलाश करते हैं। पिछले तीन-चार दशकों से ऐसे परिचय सम्मेलनो को सामाजिक लोकप्रियता मिली है, इसी तरह यदि ये संस्थाएं जाति-पाति की संकीर्णता से ऊपर उठकर अकेलेपन के शिकार बुजुर्ग पुरुष-महिलाओं के लिए इस तरह का परिचय सम्मेलन आयोजित करें तो संभव है बहुत से अवसादग्रस्त पुरुष-महिलाओं को जीने का सहारा मिल जाए।

जिंदगी की ढलान पर जब शरीर के सारे अवयव धीरे धीरे शिथिल पड़ने लगते हैं और तन्हाई का नाग डंसने दौड़ता है तब सही सायने जीवन साथी या किसी ऐसे साथी की जरुरत होती है जो मन की पीड़ा को समझकर उसे प्यार के बोल से बांटने का प्रयास करे। जवानी के दिनों में भले ही कोई इसकी फिक्र नहीं करता पर उम्र के साथ सबको एक पैसे साथी की जरुरत आन पड़ना प्राकृतिक सत्य है, ऐसे में अगर किसी का जीवन साथी साथ छोड़ चुका हो या अलग होकर स्वतंत्र जिंदगी गुजार रहा हो तो मन के दर्द की सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है।

गम के पलों में अंदर ही अंदर घुटकर सबकुछ सहन करने की नियति को महज महसूस किया जा सकता है। वैधव्य की शिकार महिला हो या बुधुरता को अभिशापित पुरुष दोनों की स्थिति एक सी होती है। कुछ दिनों की सहानुभूति के बाद उनका जीवन शाब्दिक तीरों से बिंधने के लिए अभिशप्त होता है। कोई उनके मन की दशा को समझने को तैयार नहीं होता, इससे वे मनोविकार के मरीज़ हो जाते हैं। आर्थिक संपन्नता और सामाजिक प्रतिष्ठा ुनके लिए महज संतोष की अनुभूति भर होती है।

सदियों से चली आ रही परंपराओं के बंधनों में फंसकर आम भारतीय पुरुष और नारी अक्सर जीवन के सुनहरे पलों की ऊष्मा को महसूस करने में नाकाम होते हैं जबकि पूरी दुनिया में परिवर्तन की बयार के चलने से सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर ऐसे मामलों में क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित होते रहे हैं।

इन दिनों पश्चिमी देशों में एक नया चलन देखने को मिल रहा है और वह है रिटायरमेंट के बाद शादी करने का। लोग साठ की उम्र के बाद अपना जीवन साथी चुन रहे हैं, संग जीने-मरने की कसमें खा रहा हैं। ब्रिटेन के सरकारी आंकडे बताते हैं कि वहां साठ की उम्र में शादी करने वाले मर्दो की तादाद २५कीसदी तक बढ़ गई है वही साठ या इससे ज्यादा ुम्र के बाद शादी करने वाली महिलाओं की संख्या में २१ फीसदी काइजाफा देखा गया है।

अमरीका के सरकारी आकड़े भी यही हकीकत बयां करते हैं, वहाँ ५५ से ६४ की उम्र के लोग, जिनकी शादी पहले हो चुकी होती है वे दोबारा शादी करते हैं वहीं ६५ से ज्यादा की उम्र के लोगों में से आधे लोग दोबारा शादी कर रहे हैं।

विशेषज्ञों की मानें तो अकेलापन इंसान को अवसादग्रस्त बना देता है और अवसादग्रस्त व्यक्ति अक्सर गलत फैसले लेता है। वह मानसिक रूप से बीमार होता है और हमेशा चिड़चिड़ेपन की आभा उसके क्रियाकलापों में झलकती है, बिना किसी साथी के इन्सान स्वाभाविक दिखते हुए भी अस्वाभाविक होता है और ऐसी हरकतें करता रहता है जो जीवन की जटिलता को बढ़ाती है। यदि इंसान के जीवन में दुःख बाँटनेवाला कोई हो तो उसे सुकून मिलता है, गम के थपेड़ों से उसे राहत मिलती है एवं वह निस्चिंत होकर किसी निर्णायक स्थिति में पहुँचने की पहल करने को प्रेरित होता है।

बैश्विक परिवर्तनों से प्रेरित भारतीय समाज में भी नई पहल की जा रही है, दुनिया के अन्य समाजों से सीख लेकर लोग जीवन को बेहतर ढंग से जीने का नुस्खा सीख रहे हैं और इन्हीं में से एक है विधवा या बिधुर को उम्र के मध्य में जीवन साथी चुनने का अधिकार देना जिसे धीरे धीरे ही सही सामाजिक मान्यता मिलने लगी है। पिछले वर्षों में सामाजिक संस्थाओं ने इस विषयको गंभीरता से महसूस किया है और कतिपय संस्थाएं पहल करके अधिक उम्र के नारी-पुरुषों को स्वयंवर के जरिये जीवन साथी चुनने के लिए मंच उपलब्ध कराने को तैयार हो रही हैं।

पहली शादी से उत्पन्न वंश-बेलि को भी इससे सुरक्षा मिल सकेगी। मोटे तौर पर यह भी सत्य है कि इस व्यवस्था का सबसे अधिक लाभ मध्यवर्गीय समाज को मिलेगा क्योंकि उच्च और निम्न वर्ग के लोगों में मान्य न होते हुए भी ऐसी व्यवस्था है जिससे अकेला पुरुष या महिला अपने लिए साथी का चुनाव कर ले।

सामाजिक रूप से परित्यक्त पुरुषों और नारियों के लिए परिचय सम्मेलन के आयोजन से इस बिडंबना का अंत होगा और एक नयी सामाजिक व्यवस्था सामने आएगी जो पुरुषों और महिलाओं को बेहतर जीवन जीने का माध्यम बनेगी।

मातृशक्ति नमोस्तुतेः

– दिनेश कुमार जैन

जीवन एक वरदान है, खुशी के पलों का उत्सव है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो लोगों में आकर्षण और उत्साह लाता है और लोगों को एक साथ जोड़ता है।

८ मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी मारवाड़ी महिलाओं को बहुत बधाई। इस विशेष दिवस के परिपेक्ष में अपना योगदान एवं अपनी महिलाओं को सशक्त करने के लिए, हम क्या क्या छोटे कदम उठा सकते हैं, इस पर गहन चिंतन करना चाहिए।

इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुये, हमें दो पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए और उनका मूल्यांकन करना चाहिए - सबसे पहले हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि हम अपनी युवा पीढ़ी को कैसे मजबूत करें और दूसरी बात, हमें अपनी पुरानी पीढ़ी को नई चीजें सीखने, अपग्रेड करने की प्रेरणा देनी चाहिए और चुनौतियों का सामना करने और जीवन में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।

युवा पीढ़ी

हमें गर्व है कि आज कल की युवा पीढ़ी यानि हमारे घर की लड़कियां, महिलायें सभी उभरते ज़माने के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है। ऐसा हमने इस साल की कई प्रोफेशनल परीक्षा के परिणामों में पाया - जैसे कि सी.ए.सी.एस., आई.ए.एस. आदि जहाँ लड़कियों ने अव्वल नंबर से परीक्षा में उत्तीर्ण किया और शीर्ष १० परिणाम में हमारी युवा पीढ़ी लड़कियों ने नाम कमाया। प्राय सभी शिक्षित, इंग्लिश में प्रवीण, टेक सैवी और स्मार्ट हो रही है तथा आधुनिकता के साथ आगे बढ़ रही हैं।

बस उनके साथ हमें इतना ही ध्यान देना है कि हम बचपन से, एक छोटी उम्र से ही उनमें **संस्कार के बीज कैसे बोए**। हमें उन्हें अपनी उच्च संस्कृति का आभास कराना है ताकि वो गलत हाथों में ना पड़ जाएं, वह अपने जीवन में खुशहाल रहें और अपने बच्चों को संस्कारित, सुखमय जीवन जीने की शक्ति व शिक्षा प्रदान कर सकें।

पुरानी पीढ़ी

अपनी पुरानी पीढ़ी, जिनके समय में, ना शिक्षा, ना अंग्रेजी, ना कंप्यूटर होते थे, इनके लिए हमें विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि वे अपने पोते पोतियों के साथ, बहू बेटियों के संग, कंधे से कंधा मिलाकर उनके समन्वय बैठ सकें।

उनके लिए चैप्टर लेवल पर, हमें हर १-२ महीने में, नियमित रूप से, जूम के माध्यम से, २ घंटे की ट्रेनिंग और मीटिंग का आयोजन करना चाहिए जहां हम उन्हें नई तकनीक और डिजिट लीकरण पर शिक्षा प्रदान कर सकें।

हम उन्हें कई बातों पर जानकारी एवं ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, जैसे –

यूट्यूब का कैसे प्रयोग करें,
पेटीएम से पेमेंट कैसे करें
बैंक से निकासी कैसे करें
कानूनी योजना और वसीयत पर ज्ञान
गूगल नक्शे का उपयोग कैसे करें
ओला/उबर/एप कैब बुकिंग
अपने डॉक्यूमेंट को डिजिलॉकर में रखें
अपनी मेडिकल फाइलें कैसे व्यवस्थित करें इत्यादि

और अब समय समय पर जीवन में उतार चढाव होता है, तब उन्हें हम शक्ति दें तथा उनका मनोबल बढ़ाने का प्रयास करें।

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य है – महिलाओं के सम्पूर्ण विकास हेतु सकारात्मक, आर्थिक तथा सामाजिक नीतियों के जरिए एक माहौल का निर्माण करना, ताकि वे अपनी क्षमताओं को समझा सके।

महिलाएं परिवार बनाती है, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है। इसका सीधा सीधा अर्थ यह है की महिलाओं का योगदान हर जगह है। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के बिना परिवार, समाज और देश का विकास नहीं हो सकता। महिला यह जानती है कि उसे कब और किस तरह से मुसीबतों से निपटना है। जरूरत है तो बस उसके सपनों को आजादी देने की, उन्हें सशक्त करने की।

शक्ति साधना बिना, ना बनता बिगड़ा कोई काम,
नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र की, शत-शत तुम्हें प्रणाम।
शत-शत तुम्हें प्रणाम।

कब आओगे प्रभु

रतन लाल बंका
राँची, झारखण्ड

कब आओगे प्रभु? प्रतीक्षा करते करते बहुत समय बीत गया। पता नहीं आपके आने की परिस्थितियां अभी अनुकूल हुई हैं या नहीं।। हमें तो यही आभास होता है कि त्रेता एवं द्वापर से स्थिति अभी ज्यादा विकट है। आपने ही गीता में कहा है :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। (गीता ४/७,८)

अर्थात हे भारत, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब ही मैं अपने साकार रूप में लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

त्रेता युग में असुरों का अत्याचार अधिक बढ़ गया था। ऋषि पुलस्त्य का पौत्र, ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ, ज्ञानी एवं महा पंडित, शिव तांडव स्तोत्रों का रचयिता, अत्यंत बलशाली और पराक्रमी शिव भक्त रावण ने आसुरीवृत्ति का वरण कर लिया था। सभी देवों को परास्त कर अपने अधीन कर लिया था। स्त्रियों का सतीत्व सुरक्षित नहीं रहा था। ऋषि मुनि तथा जनमानस त्रस्त थे। अपनी शक्ति के अभिमान में उसने मर्यादा की सभी सीमाएं लांघ दी थी। रावण पृथ्वी से स्वर्ग तक की सीढ़ी बनाने की कल्पना कर रहा था ताकि आदमी मरने के पूर्व ही स्वर्ग पहुँच जाए। उसके भाई खर और दूषण, राक्षसी ताड़का, मारीच, त्रिसरा, सुबाहु आदि अनेक राक्षसों ने लोगों का जीना हराम कर दिया था। वानर राज बाली अत्यंत पराक्रमी था, पर महा दुराचारी था। अपने छोटे भाई की स्त्री का ही उसने अपहरण कर लिया। फलस्वरूप आपको भगवान श्रीराम के रूप में अवतरित होना पड़ा। राक्षसों का विनाश करके रामराज्य की अवधारण को मूर्त रूप दिया। कई वर्षों तक राज्य करके धर्म की पुनर्स्थापना की। सुख शांति कायम की।

द्वापर में आपने भगवान कृष्ण के रूप में अवतरण लेकर असुरों का संहार किया। असुरों में आपके मामा कंस प्रधान थे। उसके अत्याचारों से जनमानस त्रस्त था। अपने पिता को और अपनी बहन एवं बहनोई को कारागार में डाल दिया था और बेडियों से जकड़ दिया था। ऋषि मुनियों का कत्लेआम तथा उनके यज्ञ, हवन और तपस्या में बाधा देना उसका मनोरथ था। उसकी मित्र मंडली में कई असुर शामिल थे। कौरव पांडव मतभेद तथा महाभारत संग्राम आपके सामने घटित घटना थी, कोई आपके अवतरण के पूर्व की घटना नहीं थी, जिस प्रयोजन से आपको पृथ्वी पर अवतरण की आवश्यकता पड़ी। द्रौपदी के साथ जो भी अन्याय हुआ वह भी आपके अवतरण के उपरांत हुआ। पाण्डवों के साथ कोरोवों ने जो अपराध किए, बेईमानी की तथा उनपर विभिन्न अत्याचार किया वे सब तो आपके अवतरण के बाद की घटनाएं हैं। पहले से घटित कोई घटना नहीं है जिसके लिए आपको अवतरित होना पड़ा। हां प्रभु आप अन्तरयामी हो, आगे घटित होने वाली घट नाओं से आप विग्य हो, अतः उससे पूर्व ही आप अवतरित हो गये।

पर आज कलयुग की स्थिति तो बहुत घृणित हो चली हैं, कोई मर्यादा नहीं रह गई हैं और यह स्थिति आज से नहीं हैं। धार्मिक उन्माद कई सदियों पुराना है करीब ६०० ईसा सन से इसकी शुरुआत हुई। रक्तपात से ही नए धर्म की नींव रखी गई, जिसने नहीं माना उसका कत्ल कर दिया गया। कई प्रकार के प्रलोभन धर्म परिवर्तन हेतु दिए गए। स्त्री को भोग की वस्तु समझा जाने लगा। स्त्रियों के साथ बलात्कार शुरु हो गए। मर्यादा रहित भोग की छूट देकर भी धर्म परिवर्तन कराया गया। सम्राट अशोक ने भी कलिंग में रक्तपात किया, धरा लहू से नहा गई, परंतु उसे अपने कृत्य का पश्चाताप हुआ और बौद्ध धर्म अपनाकर अहिंसा के पथ पर चल पड़ा और अहिंसा के प्रचार में अपना शेष जीवन लगा दिया। मुगलों ने तो कत्लेआम कर लाखों निरपराध व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया और पूरे के पूरे राष्ट्र को इस्लामी राष्ट्र बना दिया। ईरान पारसी धर्मावलंबी शान्ति प्रिय राष्ट्र था। उसका नामोनिशान मिट गया और पारस से ईरान बनकर इस्लामी राष्ट्र बन गया। बचेखुचे कुछ पारसियों ने भारत में शरण ग्रहण की और भारतीय नागरिक बनकर शांतिपूर्वक तथा भारत की तरक्की में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। अब भारत ही उनकी मातृभूमि है। अफगानिस्तान हिन्दू राष्ट्र था। गंधार से अफगानिस्तान बन गया। यह सहज ही नहीं बन गया। इसके लिए कितना लहू बहा, आपसे क्या छिपा है। अफगानिस्तान से भारत में हजारों की संख्या में कुछ हमलावर आए थे। भारत एक संगठित राष्ट्र नहीं था। छोटे छोटे टुकड़ों में बंटा था। राष्ट्रों में आपसी मेलजोल की कमी थी। सामन्जस्य और संवाद का अभाव था। रक्तपात करके अपना साम्राज्य स्थापित किया। धर्मांतरण किया। आज भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश मिलाकर मुस्लिम आबादी ६०-७० करोड़ के लगभग हो गई है। तलवार की धार पर आज लगभग पूरा अफ्रिका मुस्लिम राष्ट्र हो गया है। जितना उपद्रव त्रेता और द्वापर में राक्षसों ने नहीं किया था उससे कयी गुणा अधिक कलयुग में इस्लाम फैलाने वालों ने कर

दिया। चंगेज खां, तैमूर लंग, खिलजी, औरंगजेब, मोहम्मद गोरी, मोहम्मद गजनबी, बाबर, कुतुबुद्दीन एवक, इल्तुतमिश आदि ने लहू की नदियां बहा दी।

अंग्रेजों ने जिन्हें सभ्य कहा जाता है और कानून पर चलने वाले कहा जाता है कम अत्याचार नहीं किए। २०० साल के शासनकाल में कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के फंदे पर लटका दिया, जेलों में भयंकर अमानवीय यातनाएं दी गयीं। जलियांवाला बाग में निहत्थों पर गोलियां बरसाई गई। स्वतन्त्रता के नायकों को जेलों में बेंतों से पीटा गया। कोड़े मारे गए। गरीब तबके के लोगों से गुलामों जैसा बर्ताव किया गया।

आज स्वतंत्र भारत में स्थिति और बदतर हो गई है क्योंकि मामूली झंझट में किसी की हत्या कर देना आम बात हो गई है। भाई भाई की हत्या कर देता है, बेटा बाप की, बाप बेटा की, दोस्त दोस्त की हत्या कर देता है। रोज सैकड़ों हत्याएं ऐसी होती हैं। रिश्तो की कोई मर्यादा नहीं रह गई हैं। महिलाएं सुरक्षित नहीं है। बलात्कार उसके बाद हत्या ऐसी विभस्त घटनाएं रोज घटित हो रही हैं। इसमें संबंधों का लिहाज भी नहीं रखते।

परिणय संस्कार की पवित्रता को लांघकर संबंधों में स्वच्छन्दता आगई है। बिना विवाह किए जब जितना दिन चाहे साथ रह लेते हैं। मन भर गया फिर कोई दूसरा साथी खोज लेते हैं। विवाह की जिम्मेदारी से भागते हैं। बच्चों का पालनपोषण बोझ लगने लगा है। बच्चे पैदा करना ही नहीं चाहते। आगे वंश बढ़ाने की परंपरा खत्म होती जा रही है। आबादी का संतुलन बिगड़ने लगा है। धीरे-धीरे वृद्धजनों की संख्या में बहुत वृद्धि हो रही है और जवानों की संख्या घट रही है। कई राष्ट्रों में तो ऐसी स्थिति आ गई है और वहां के राष्ट्राध्यक्ष इस समस्या को लेकर चिंतित हैं।

वृद्ध मां-बाप को पालना जवान बेटों और बहुओं को भारी लगने लगा है वृद्ध लोगों के लिए वृद्धाश्रम खुलने लगे हैं।

हर देश विनाशकारी हथियारों का भंडारण कर रहा है। अगर ५-७ ऐसे शक्तिशाली बंब प्रयोग में ले लिए जाएं तो पूरी दुनिया खत्म होते देर नहीं लगेगी। रासायनिक अस्त्रों का उत्पादन भी किया जा रहा है। घातक बीमारियों के संक्रमण के लिए प्रयोगशालाओं में जीवाणु तैयार किए जा रहे हैं। ऐसी शंका है कि पिछले दिनों आया कोरोना का संक्रमण भी उसी कड़ी की देन था। पर्यावरण बहुत दूषित हो चला है। हवाएं जहरीली हो गई हैं। पानी दुषित हो गया है। ऋतु का समय काल सब परिवर्तित हो गया है। हिमखंड पिघलने लगे हैं। समुद्र का जल स्तर बढ़ने लगा है। कोई वस्तु शुद्ध नहीं मिलती है। मिलावट का हर जगह बोलबाला है। धार्मिक अनुष्ठानों में भी दिखावा और पाखंड आ गया है। संबंधों की मर्यादा भंग हो गई है। भोग विलास की प्रधानता हो गई है। संबंधों की परिधि का अतिक्रमण हो रहा है। इसमें कोई शर्म, लज्जा, लिहाज नहीं रहा है। कई राष्ट्रों ने समलैंगिक संबंधों को वैधानिक स्वरूप दे दिया है। सुनकर, पढ़कर और सोचकर मस्तिष्क चक्कर खा जा रहा है। प्रभु किस कारण से आपके अवतरण में विलंब हो रहा है। स्थिति तो बहुत ही विकट है।

जैसा राजा तैसी प्रजा। आपने भी गीता में ऐसा ही कुछ कहा है:

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्त दनुवर्तते। (गीता ३/२१)

अर्थात महापुरुष जो जो आचरण करता है सामान्य व्यक्ति भी उसी का अनुसरण करते है। वह अपने अनुकरणीय कार्यों से जो आदर्श प्रस्तुत करता है संपूर्ण विश्व उसका अनुसरण करता है। कुछ अपवाद को छोड़कर राजनेता सब भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। इसी कारण आज हर जगह ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्ट ाचार सुरसा की तरह फैल चुका है। भ्रष्टाचारी ही भ्रष्टाचारी के यहां भ्रष्टाचार का निरीक्षण करता है। सब गोलमाल है प्रभु। किसी की हत्या के लिए किसी को सुपारी दी जाती है, यानी पैसे देकर हत्या करने का ठेका दिया जाता है। उग्रवादी जहां भी हैं अपने क्षेत्र तथा आसपास के क्षेत्रों में लेवी यानी रंगदारी वसूल करते हैं। नहीं दो तो हत्या कर देते हैं। समूह में आते हैं तथा जिसे चाहते हैं उठाकर ले जाते हैं। खूब पिटाई के बाद उसकी हत्या कर देते हैं, अपना आतंक फैलाने के लिए, अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए।

आतंकवादी उग्रवादियों से और भी आगे हैं। वे तो पूरे समूह को ही खत्म करने का प्रयास करत है। हत्या और बलात्कार बहुत ही साधारण सी बात हो गई है। प्रतिदिन का समाचार पत्र इन खबरों से भरा पड़ा रहता है। पहचान मिटाने के लिए जिसका बलात्कार करते हैं उसकी भी हत्या कर देते है तथा शव को टुकड़े-टुकड़े करके विभिन्न स्थानों पर फेंक देते है। सब घृणास्पद कार्य हो रहे हैं प्रभु। साधारण, सच्चे, सीधे-साधे, साफ और इमानदार आदमी का तो जैसे जीना ही मुश्किल हो गया है। आने वाला समय तो और भी विकट दिखाई दे रहा है, कारण हिंसा खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही है। तलाक और डिवोर्स की अवधारणा सनातन धर्म मे नहीं है पर अब सनातनी के यहां भी संबंध विच्छेद आम बात हो गई है। घर घर की कहानी है। स्त्रियां इसको स्वाभिमान की लड़ाई बतलाती है। पर यह स्वाभिमान नहीं, अहंकार है तथा इससे घर बर्बाद हो रहे हैं। जो बच्चे अगर हैं तो उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। बड़ों का, बुजुर्गों का सम्मान दिन पर दिन घटता जा रहा है। प्रभु किस कारण से आपके आने में विलंब हो रहा है। प्रभु शीघ्र अवतरित होकर मानव जाति का कल्याण करें। विधर्मियों का नाश करें, धर्म की स्थापना करें यही विनती है प्रभु। जितना शीघ्र आपका अवतरण हो उतना ही उत्तम है। आगे आप अपनी मर्ज़ी के मालिक हो। जैसा श्रेष्ठ समझ में आता है वह ही करो। आप दीनबन्धु दीनदयाल हो।

हम तो क्षुद्र जीव है जो मन में आया लिख दिया, आप जो करोगे अच्छा ही करोगे। शाष्टांग प्रणाम प्रभु।

महाशिवरात्रि पर विशेष

कविता

भगवान शिव भी अद्‌भुत हैं।
अन्य ईश्वर व देवी देवता स्वर्णभूषणो से आच्छादित।
महलो में रहते। स्वर्ण मुकुट धारी। रत्नजड़ित वस्त्र।
एवं भगवान शिव
कोई स्वर्ण भूषण नही।
गले मे सर्प।
पहाड़ो पर निवास करते।
कोई मुकुट नही। माथे पर चंद्रमा।
वस्त्र के रूप में व्याघ्र छाल।
तन पर धूनी।
परंतु सर्वाधिक दिव्य। कपूर की तरह गौर वर्ण।
तथा चरम निर्मल हृदय।
शुभकर्ता व विघ्नहर्ता गणेश जी के जन्मदाता।
आनंद के सर्वोच्च स्वरूपो में से एक नृत्य संगीत के पुरोधा।
भूत पिशाच जिनके अनुचर।
अर्थात उनमें भी ईश्वर भक्ति दैव भाव का सृजन करने वाले।
परम दयालु परंतु दुष्टों के प्रति क्रोधी, उनका दमन करने वाले।
सहज सरल। समस्त मनोकामना पूर्ण करने वाले (फक्कड़ भी महादानी भी)

है न शिव अद्‌भुत।

शिव एक संपूर्ण दर्शन है।
वर्जनाओं को तोड़ने वाले।
पूरे समाज को अंगीकार करने वाले।
सार्थक व समावेशी।
मानवीय मूल्यों के अधिष्ठाता।

हे शिव आपको कोटि कोटि प्रणाम।

तुम्ही तुम हो
शिव हो

अनादि हो ब्रह्म हो
अनंत आशीर्वाद का समुद्र हो
विराट कृपा की आकाश गंगा हो

शिव हो

आत्मसात हो
अहम् हो
ईश्वरत्व का विस्तार हो

शिव हो

अभिभावक का भाव हो
रक्षा का अभेध कवच हो
गणेश के हो पार्वती के हो

तुम हो शिव हो
अक्षय हो जय हो....

– शशांक भारद्वाज

EWS सर्टिफिकेट बनाए

केंद्र और राज्य के गरीब लोगों के लिये मोदी सरकार ने पहली बार केवल सामान्य वर्ग (जनरल केंटेगरी) के लिए अलग से 10% EWS कैटेगरी में आरक्षण दिया है, जिसे EWS (Economically Weaker Section) कैटेगरी कहा जाता है, जिसके लिये मारवाड़ी समाज के ज्यादातर लोग पात्र है" और EWS के हकदार हैं। ये आरक्षण हमारे समाज के आर्थिक और शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है, लेकिन अफसोस है कि EWS के 10% आरक्षण को लेकर मारवाड़ी समाज में जानकारी का बहुत ज्यादा अभाव है। अतः इसका फायदा अन्य लोग ही ज्यादातर ले लेते है, जबकि अन्य लोग SC/ST/OBC आदि का फायदा पिछले ७० सालों से ही लेते रहे है, जो हमें आमतौर पर नहीं मिलता। इसलिये हमारे समाज में EWS को लेकर जागरुकता और प्रचार करना जरुरी है और वे हम सब की जिम्मेदारी है।

पात्रताः जो मारवाड़ी भाई/बहन सामान्य वर्ग से है (जनरल कैटेगरी से है) और जिनकी सालाना अत्यन्त यानी वार्षिक आय ८ लाख रुपये से कम है, वह इस आरक्षण के लिये पात्र है।

शैक्षणिक क्षेत्र में फायदा :

सभी शिक्षण संस्थाओं में सभी कोर्सेस के लिये 10% सीट्स EWS कैटेगरी के लिये आरक्षित है और फीस मे भी सहूलियत मिलती है। 11th/12th/Diploma/Graduation/BA/B.Sc/B.Com/B.Ed/Medical/Pharmacy/Nursing/Engineering/Polytechnic/LLB/ITI etc. सभी शासकीय नौकरियों में / गवर्नमेंट की हर नौकरी में 10% नौकरिया EWS कैटेगरी के लिये आरक्षित है। कैटेगरी 4 से लेकर क्लास 1 गजेटेड, सिपाही से लेकर कलेक्टर तक की सभी नौकरियों में EWS आरक्षण का लाभ मिलता है। 10% EWS आरक्षण का लाभ लेने के लिये आपके पास EWS सर्टिफिकेट होना जरुरी है!!*

EWS सर्टिफिकेट कैसे हासिल करें? *EWS सर्टिफिकेट तहसीलदार के ऑफिस से मिलता है, आपको अपने तहसील के सेतु सुविधा केन्द्र च्वाइस सेन्टर या ई-सेवा केंद्र से आवेदन करना पड़ेगा।

आवश्यक दस्तावेज :

१. पालक/अभिभावक का वार्षिक आय प्रमाणपत्र
२. लाभार्थी का आधार कार्ड
३. टी. सी. / जन्म प्रमाणपत्र

नोट - EWS के सीमीत 10% का quote अपने ही लोगों को आपस में बताये और EWS Certificate बनाने में समाज के लोगों की मदद करें। ज्यादा-से-ज्यादा अपने मारवाड़ी भाईयों बहनों तक यह जानकारी पहुँचाए। धन्यवाद।

"अमृताहार : स्वस्थ जीवन के लिए अंकुरित अन्न है अमृताहार, जानिए इसके आयुर्वेदिक गुण..."

"हम सभी के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि अंकुरित आहार में पोषण के तत्व कैसे पैदा होते हैं?"

दरअसल सभी बीज सामान्य रूप से निष्क्रिय अवस्था में पड़े रहते हैं। इन बीजों के अंदर संरक्षित जीवन की उत्पत्ति के कारक तत्व अनुकूल परिस्थितियां पाते ही सक्रिय हो जाते हैं। अमृताहार में बीजों तथा दालों के अंदर स्थित निष्क्रिय तत्वों को सक्रिय कर आहार के रूप में प्रयोग किया जाता है।

"आधुनिक प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि एक बीज के भीतर एक पूरा जीवन छिपा होता है। इसमें वे सभी तत्व संग्रहित होते है जो पौधे का जीवन चलाते हैं। यही तत्व हमारे शरीर के लिए भी आवश्यक होते है यही कारण है कि अंकुरित बीजों को लिविंग फूड भी कहा जाता है।'

विभिन्न अनाजों व दालों को पानी में भिगो देने पर उनके अंदर स्थित सभी तत्व सक्रिय हो जाते हैं। इससे बीज में अनेक रासायनिक परिवर्तन आते है। अंकुरण की अवस्था में बीजों में विटामिन सी, आयरन तथा फास्फोरस की मात्रा कई गुना बढ़ जाती है। इतना ही नहीं अंकुरण के बाद कुछ ऐसे तत्वों की मात्रा में कमी आती है जो शरीर के लिए हानिकारक होते हैं, इस प्रकार के तत्वों में ओलिगासैकराइड्स प्रमुख है।

"अंकुरण के बाद विभिन्न दालों में पाया जाने वाला स्टार्च, ग्लूकोज में तथा फ्राक्टोज, भाल्टोज में बदल जाता है। इससे इनका स्वाद तो बढ़ता ही है साथ ही वे सुपाच्य भी हो जाती हैं। इसी प्रकार की प्रक्रिया अनाज में भी होती है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया अनाज में नीव तथा दालों में कुछ धीमी गति से होती है।"

अमृताहार बनाने के लिए चना, मूंग, राजमा, मैथी, सोंठ, लोबिया, सोयाबीन, सूर्यमुखी तथा गेहूं के बीजों को प्रयोग किया जाता है। इनके अतिरिक्त अन्य दालों को भी अंकुरित कर प्रयोग किया जा सकता है। अंकुरित करने के लिए बीजों को अच्छी तरह धोकर जार या किसी अन्य बर्तन में दस-बारह घंटो के लिए भिगो देना चाहिए। बीजों को भिगोने के लिए इतना पानी जरुर जालें कि उसमें बीज पूरी तरह डूब जाए। अच्छी तरह भीगे हुए बीजों को पानी से दोबारा अच्छी तरह धोकर साफ सूती कपड़े की एक पोट ली में टांग दे। इस तरह से भीगे हुए बीजों का अंकुरण लगभग २४ घंटे में हो जाता है। गर्मियों में यह विशेष ध्यान रखना जरूरी है कि लटकाई गई पोटली सूखे नहीं इसके लिए थोड़ी-थोड़ी देर में उस पर पानी का छिड़काव करते रहें जिससे पीटली में नमी बनी रहे।

"अंकुरित बीजों को कच्चा ही खाना चाहिए क्योंकि पकाने से उनके पोषक तत्व नष्ट हो जाते है। इन बीजों का स्वाद कुछ कसैला होता है इसलिए उनमें नमक, टमाटर, खीरा, नींबू आदि डाल जा सकता है, इससे उनका स्वाद बढ़ जाता है।

अंकुरित बीजों के प्रयोग से कमजोरी तथा कई प्रकार के रोग दूर होने के साथ–साथ शरीर को उचित पो।ण भी मिलता है। इनसे हमारा इक्यून सिस्टम भी मजबूत होता है। नशाखोरी तथा मद्यपान की लत छड़ाने में भी यह अमृतहार सहायक होता है।

"तीन प्रकार के बीजों का प्रयोग मुख्यतः किया जाता है, चयन रोग के आधार पर किया जाता है।"

"मधुमेह" के रोगियों के लिए चना व मेथी।

"हृदय" रोमियों के लिए चना तथा मूंग।

बढ़ते "बच्चों व माताओं" के लिए अंगूर, बादाम व खजूर।

अंकुरण के लिए ताजा तथा स्वस्थ बीजों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखे कि अंकुरण पुराना, दूर्गन्धयुक्त या बासी न हो।

"सामान्य व्यक्ति किसी भी प्रकार के अमृताहार का प्रयोग कर सकता है। नियमित सेवन से रक्त अल्पता, हड्डियों की बीमारिया, मानसिक तनाव, कब्ज, अनिद्रा, बवासीर, मोटापा तथा पेट के कई रोगों से छुटकारा मिल जाता है।"

"।। शुभ वंदन।"

"प्रेषक : डॉ. दर्शन बांगिया"

ॐ सर्व भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्व भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

नागपत्न्य ऊचुः

नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने।
भूतावासाय भूताय पराय परमात्मने।।

हे भगवान्, हम आपको सादर नमस्कार करती हैं। यद्यपि आप समस्त जीवों के हृदयों में परमात्मा रूप में स्थित हैं, तो भी आप सर्वव्यापी है। यद्यपि आप समस्त अत्यत्न भौतिक तत्वों के मूल आश्रय हैं किन्तु आप उनके सृजन के पूर्व से विद्यमान हैं। यद्यपि आप प्रत्येक वस्तु के कारणस्वरूप हैं किन्तु परमात्मा होने से आप भौतिक कार्य-कारण से परे हैं।

ज्ञानविज्ञाननीधये ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अगुणायाविकाराय नमस्ते प्राकृताय य।।

हे परम सत्य, हम आपको सादर नमस्कार करती हैं। आप समस्त दिव्य चेतना एवं शक्ति के आगार हैं और अनन्त शक्तियों के स्वामी हैं। यद्यपि प्रकृति के मूल संचालक हैं।

कालाय कालनाभाय कालावयवसाक्षिणे।
विश्वाय तदुपद्रष्ट्रे तत्कर्त्रे विश्वहेतवे।।

हम आपको सादर नमस्कार करती हैं। आप साक्षात् काल, काल के आश्रय तथा काल भिन्न भिन्न अवस्थाओं के साक्षी हैं। आप ब्राह्मण और इसके पृथक द्रष्टा भी हैं। आप इसके स्रष्टा भी हैं और इसके समस्त कारणों के कारण हैं।

भूतमात्रेन्द्रियप्राणमनोबुद्ध्याशयात्मने।
त्रिगुणेनाभिमानेन गूढस्वात्मानुभूतये।।
नमोऽनन्ताय सूक्ष्याय कूटस्थाय विपश्चिते।
नानावादानुरोधाय वाच्यवाचकशक्तये।।

आप भौतिक तत्त्वों के, अनुभूति के सूक्ष्म आधार के, इन्द्रियों के, प्राणवायु के तथा मन, बुद्धि एवं चेतना के परमात्मा हैं। हम आपको सादर नमस्कार करती हैं। आपकी ही व्यवस्था के फलस्वरूप सूक्ष्मतम चिन्मय आत्माएँ प्रकृति के तीनों गुणों के रूप में अपनी झूठी पहचान बनाती हैं। फलस्वरूप उनकी खूद की अनुभूति प्रच्छन्न हो जाती है। हे अनन्त भगवान, हे परम सूक्ष्म एवं सर्वज्ञ भगवान, हम आपको प्रणाम करती हैं, जो सर्वदा स्थायी दिव्यता में विद्यमान रहते हैं, विभिन्न वादों के विरोधी विचारों को स्वीकृति देते हैं और व्यक्त विचारों तथा उनको व्यक्त करनेवाले शब्दों को प्रोत्साहन देने वाली शक्ति हैं। किन्तु आप मुझे अपना सेवक मानें और अपनी दया का पात्र बना लें।

एकस्त्वमात्मा पुरुषः पुराणः
सत्यः स्वयंज्योतिरनन्त आद्यः।
नित्योऽक्षरोऽजस्त्रसुखो निरञ्ज नः
पूर्णाद्वयो मुक्त उपाधितोऽमृतः।।

आप ही परमात्मा, आदि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्, परम सत्य, स्वयंप्रकट, अनन्त तथा अनादि हैं। आप शाश्वत तथा अच्युत, पूर्ण, अद्वितीय तथा सारी भौतिक उपाधियों से मुक्त हैं। न तो आपके सुख को रोका जा सकता है, न ही आपका भौतिक कल्मष से कोई नाता है। आप विनाशरहित तथा अमृत हैं।

तदस्तु मे नाथ स भूरिभागो
भवेऽत्र वान्यत्र तु वा निरश्चाम्।
येनाहमेकोऽपि भवज्जनानां
भूत्वा निषेवे तव पादपल्लवम्।।

इसलिए हे प्रभु, मेरी प्रार्थना है कि मैं इतना भाग्यशाली बन सकूँ कि इसी जीवन में ब्रह्मा के रूप में या दूसरे जीवन में जहाँ कहीं भी जन्म लूँ, मेरी गणना आपके भक्तों में हो। मैं प्रार्थना करता हूँ कि चाहे पशु योनि में ही सही, मैं जहाँ कहीं भी होऊँ, आपके चरणकमलों की भक्ति में लग सकूँ।

अनुजानीहि मां कृष्णा सर्वं त्वं वेत्सि सर्वदृक्।
त्वमेव जगतां नाथो जगदेतत्तवार्पितम्।।

हे कृष्ण, अब मैं आपसे विदा लेने की अनुमति के लिए विनीत भाव से अनुरोध करता हूँ। वास्तव में आप समस्त वस्तुओं के ज्ञाता तथा द्रष्टा हैं। आप समस्त ब्रह्मांड के स्वामी हैं फिर भी मैं आपको यह एक ब्रह्मांड अर्पित करता हूँ।

श्रीकृष्ण वृष्णनकुलपुष्करजोषदायिन्
क्ष्मानिर्जरद्विजपशूदधिवृद्धिकारिन्।
उद्धर्मशार्वरहर क्षितिराक्षसघ्नु—
गाकल्पमार्कमर्हन्भगवन्नमस्ते।।

हे कृष्ण, आप कमल तुल्य वृष्णि कुल को सुख प्रदान करनेवाले हैं और पृथ्वी, देवता, ब्राह्मण तथा गौवों से युक्त महासागर को बढ़ाने वाले हैं। आप अधर्म रूपी गहरे अन्धकार को दूर करते हैं और इस पृथ्वी में प्रकट हुए राक्षसों का विरोध करते हैं। हे भगवान्, जब तक यह ब्रह्मांड बना रहेगा और जब तक सूर्य चमकेगा मैं आपको सादर नमस्कार करता रहूँगा।

नमः प्रमाणमूलाय कवये शास्त्रयोनये।
प्रवृत्ताय निवृत्ताय निगमाय नमो नमः।।

समस्त प्रमाणों के आधार, शास्त्रों के प्रणेता तथा परम स्रोत, इन्द्रिय तृप्ति को प्रोत्साहित करने वाले तथा भौतिक जगत से विराग उत्पन्न करनेवाले वैदिक साहित्य में अपने को प्रकट करनेवाले हम आपको सादर नमस्कार करती हैं।

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 27th February 2023
RNI Regd. No. 2866/1968

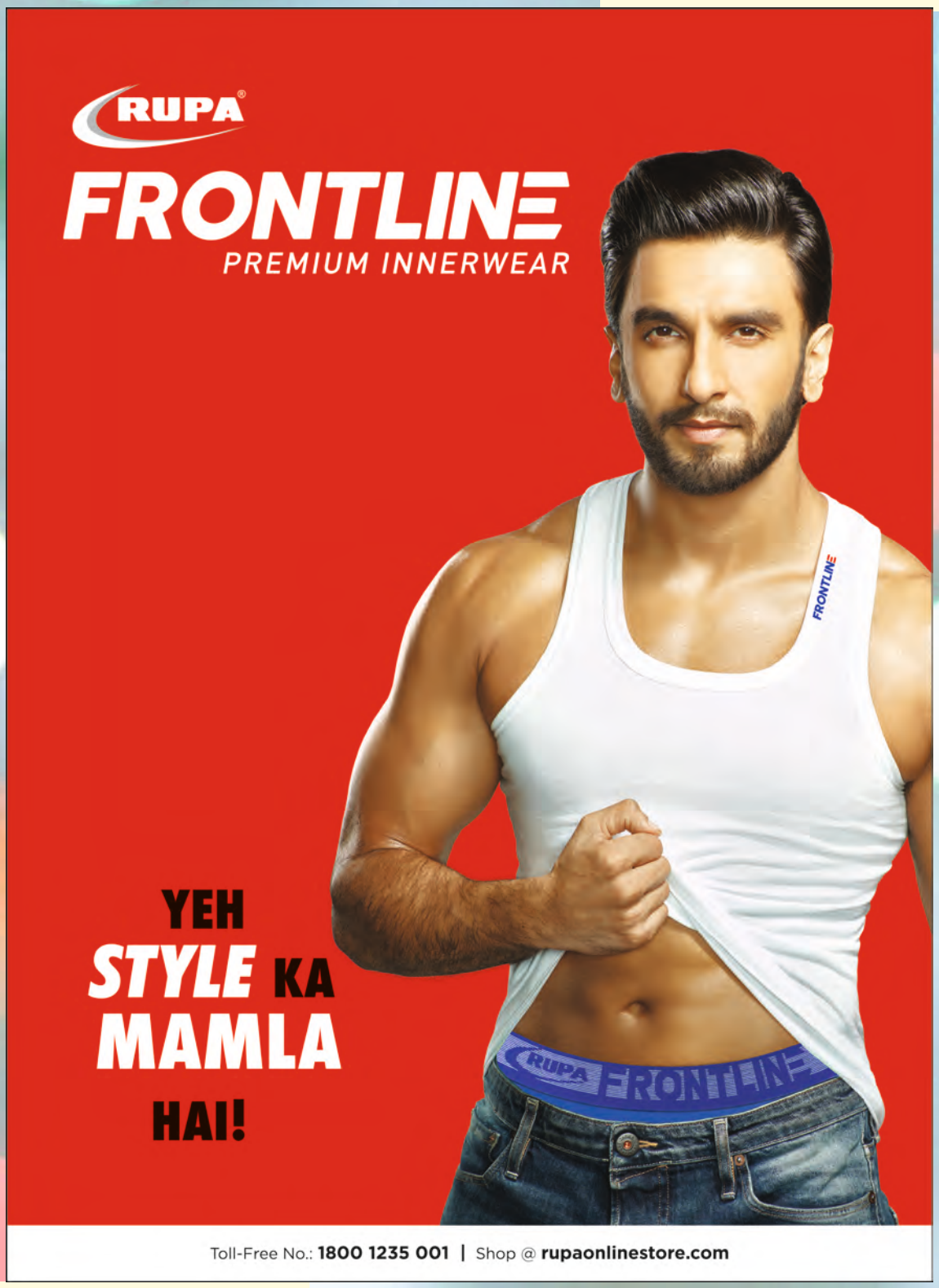

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com